July-August 2016
(Only for private circulation)

mss

जीवन साक्षी

(मसीही साहित्य संस्था द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष 5 | जुलाई-अगस्त 2016 | तेइसवां संस्करण

"तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा।"

यूहन्ना 8:32

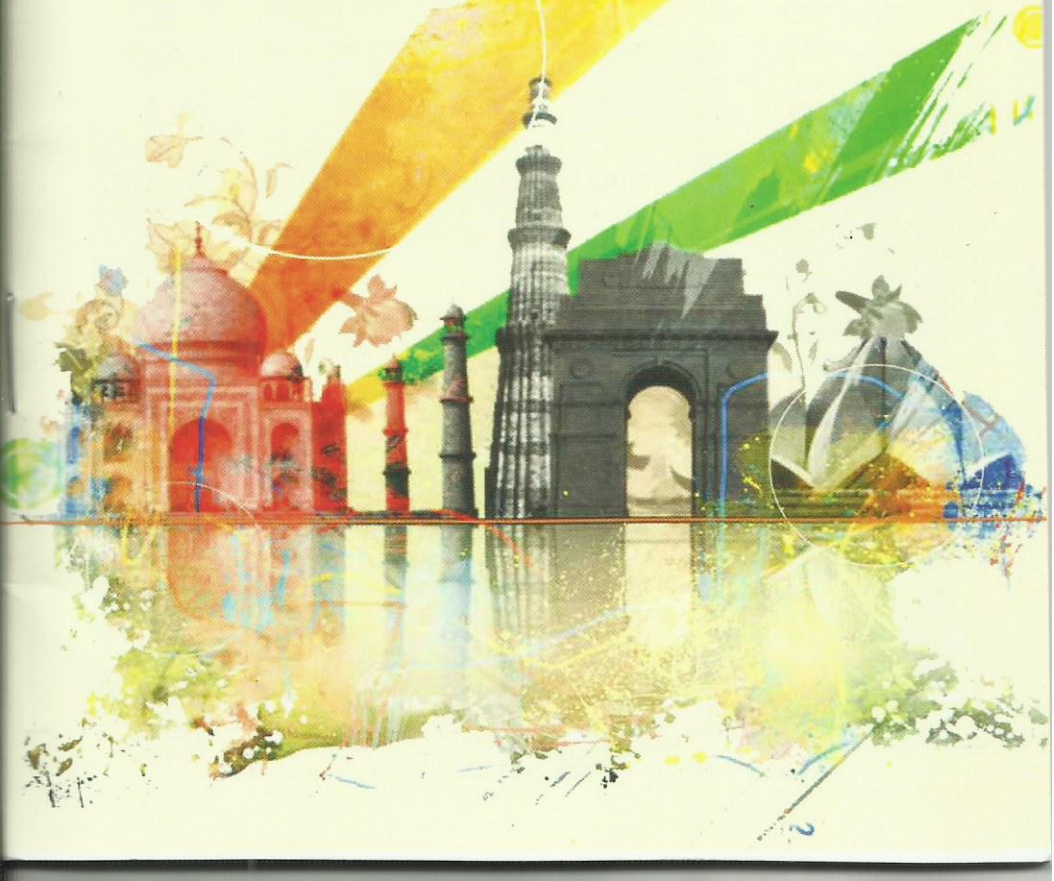

MSS BOOKS

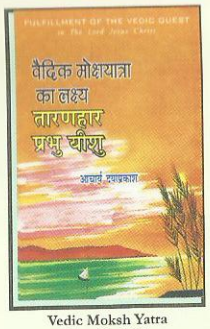

Vedic Moksh Yatra
Price Rs. 75/-

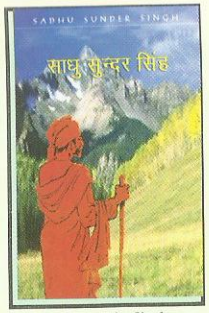

Sadhu Sunder Singh
Price Rs. 25/-

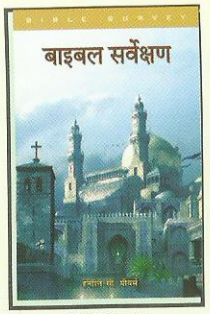

Bible Survey
Price Rs. 400/-

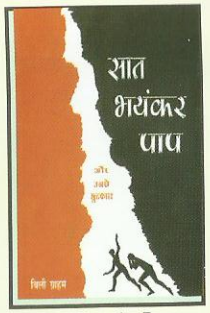

Saat Bhayankar Paap
Price Rs. 30/-

Testimony of Pandita Ramabai. Price Rs. 40/-

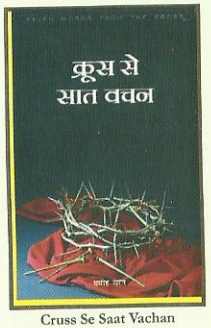

Cruss Se Saat Vachan
Price Rs. 35/-

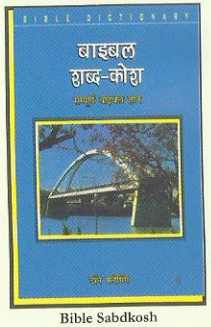

Bible Sabdkosh
Price Rs. 400/-

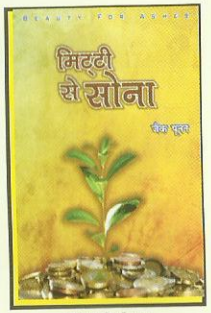

Mitte Se Sona
Price Rs. 60/-

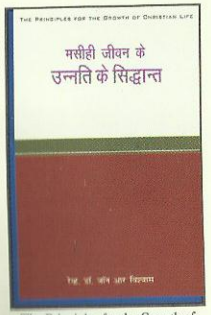

The Principles for the Growth of Christian Life. Price Rs. 120/-

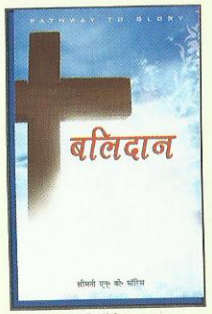

Balidan
Price Rs. 40/-

Purpose Driven Life (Hindi)
Price Rs. 200/-

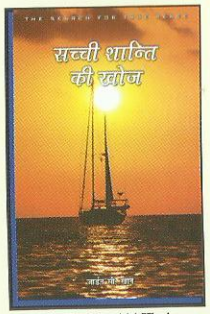

Sacche Santi ki Khoj
Price Rs.40/-

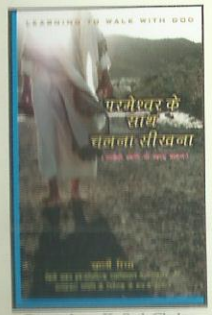

Parmeshwar Ke Sath Chalna Sikhna. Price Rs. 85/-

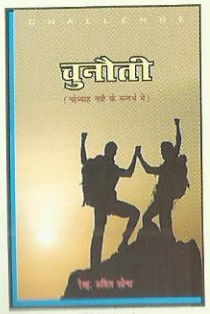

Chunauti
Price Rs. 50/-

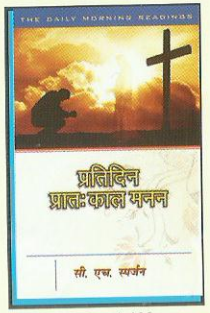

Pratidin Pratakal Manan
Price Rs. 175/-

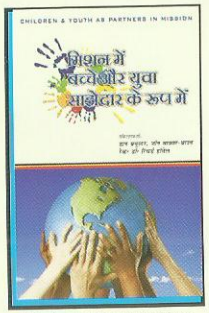

Mission me Bacche or Yuva Sajhedar ke rup me
Price Rs. 150/-

For More Information:
Contact to MSS Call on 011-23320253, 23320373 or E-mail: mssjanpath@gmail.com

जीवन साक्षी

मसीही साहित्य संस्था (एम.एस.एस.) की द्विमासिक पत्रिका

वर्ष 2016 माह: जुलाई-अगस्त, अंक 23

संपादक
सुनील कुमार

सह संपादक
एन्ड्रू चरन
सन्तोष घूता

ग्राफिक डिजाईनर
मनीष चोपड़ा
अभिषेक विश्वास

संपादक मंडल:
आचार्य डॉ. जॉन आर. विश्वास
आचार्य डॉ. के. डी. भट्ट
रेव्ह. राजेश गार्डिया
डॉ॰ एन. स्टीफन

ADVERTISEMENT RATE

Centre Spread	:	Rs. 4,000/-
Back Cover	:	Rs. 3,500/-
Front Inside	:	Rs. 3,000/-
Back Inside Page	:	Rs. 2,500/-
Ordinary Page	:	Rs. 1,500/-
Half Page	:	Rs. 1,000/-
One third Page	:	Rs. 700/-
Quarter Page	:	Rs. 500/-

Send your advertisement matter 6 weeks in advance, along with payment by D.D. or M.O. in favour of Masihi Sahitya Sanstha. Pl. send two typed copies of your advertisements.

Note
No article in 'Jeevan Sakshi' should be reproduced/translated without editor's written permission.

प्रति मंगाने का पता
मसीही साहित्य संस्था
70 जनपथ, नई दिल्ली-110001
011-23320373, 23320253,
E-mail: infojeevansakshi@gmail.com

जीवन साक्षी की वार्षिक अनुदान राशि रु. 200/- है।

CONTENTS

- सम्पादकीय 2
- सत्य के द्वारा परिवर्तन 4
  रिक वारेन
- आजादी के रंग 10
  डॉ॰ विश्वास नाथ
- एक और मौका 12
  अनूप दास
- शैतान का हमला 13
  एन्ड्रू चरन
- बराबर मजदूरी 15
  डेविड सिंह
- साधु की गुफा 23
  एमी कार्माइकल
- दूसरों के सामने आपकी गवाही 29
  एन्ड्रू चरन
- राई के दाने के समान विश्वास 31
  बच्चों के लिए
- स्वतन्त्रता 36
  सन्तोष घूता

यीशु को अपने नायक के रूप में चुन लें

प्रिय भाईयों / बहनों
प्रभु यीशु के मधुर नाम में जय मसीह की!

नायक शब्द आते ही हमारे हृदय में विभिन्न प्रकार के प्रश्न व कल्पनाएं आने लगती हैं। ये स्वभाविक भी है क्योंकि हर व्यक्ति को अपना कोई न कोई नायक या अगुवा चाहिए। मसीही समाज में भी इसका बहुत महत्व है। प्रश्न यह है कि हमारा या मेरा नायक कौन है? यदि हम एक अच्छे नायक की खूबियों पर विचार करें तो हम पाएंगे कि यीशु मसीह सर्वश्रेष्ठ नायक थे। क्या कभी हमने अपने जीवन में यीशु मसीह को नायक के रूप में स्वीकार किया है की नहीं?

मेरा जवानों से यह आहवान् है: "कि आज ही चुन लें कि हमें किसकी सेवा करनी है और हमारा नायक कौन है?" एक निश्चयपूर्ण चुनाव की ज़रूरत होती है, क्योंकि यीशु ने कहा, "तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

अगर हमारे हृदय मसीह के प्रेम से भरे हैं, तो यह प्रगट हो जाएगा कि वे उन मनोवेगों से ज़्यादा सामर्थी हैं जो बीते समय में हमें अपने वश में रखते थे, जिनमें फंस कर हमने अच्छे विचारों को अनदेखा किया था, और अपनी आत्मा शैतान के प्रलोभनों में फसा कर उसके हवाले कर दी थी। जब एक पापी का हृदय छू लिया जाता है, तब वह अपनी इच्छा ईश्वर की इच्छा को सौंप देता है... उसे यीशु में एक बजोड़ मनोहरता नज़र आती है, और उनके हृदय उनके वश में हो जाते हैं।

परमेश्वर के काम में रुकावटें तो आएंगी, लेकिन भयभीत न हों। राजाओं के राजा, जो वाचा के विश्वासयोग्य प्रभु हैं, अपनी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य के साथ एक दयालु चरवाहे की कोमलता को जोड़ देते हैं। उनकी शक्ति परिपूर्ण है, और उनके लोगों के लिए उनकी प्रतिज्ञाओं के पक्के तौर पर पूरा होने की शपथ है। अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए वे सारी बाधाएं दूर कर देंगे। उनके पास हर एक मुश्किल को दूर करने के उनके अपने ज़रिए हैं।

आज भारतवर्ष में मसीहियत को ऐसे मज़बूत जवानों की ज़रूरत है जो इस इंतज़ार में नहीं रहेंगे कि पहले उनका रास्ता आरामदेह हो जाए, या उनकी सारी बाधाएं दूर हो जाएं, बल्कि आज ऐसे जवान चाहिए जो हताश हो चुके लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत का कारण बनें। यीशु जब इस संसार में थे तो उन्होंने किसी का इंतजार नहीं किया बल्कि कार्य को अपने हाथों से किया जो एक अच्छे नायक की विशेषता होती है। यदि आप योग्य हैं तो उस कार्य को करने के लिए किसी का इंतजार न करें क्योंकि प्रभु चाहते हैं कि आप अगुवे बनें।

मसीही सेवा में लगे कुछ लोग कमज़ोर, डरपोक और आसानी से हिम्मत हार जाने वाले होते हैं। उनमें जोश नहीं होता। उनमें चरित्र के वे सद्गुण नहीं होते जो कुछ करने की सामर्थ्य देते हैं - ऐसी आत्मा और ऊर्जा जो उत्साह पैदा करते हैं। जिन्हें सफल होना है, उन्हें साहसी और आशा से भरे हुए होना है। हमें उनमें न सिर्फ भीतरी गुण पैदा करने हैं बल्कि ऐसे गुण भी बढ़ाने हैं जो बाहर काम करें। यद्यपि उन्हें ऐसे कोमल उत्तर देने हैं जो क्रोध को शांत कर दें, फिर भी उनमें बुराई को जीतने के लिए एक नायक जैसा साहस होना चाहिए। ऐसे सद्भाव के द्वारा जो सब कुछ सह लेता है, उन्हें चरित्र का ऐसा बल चाहिए जो उनके प्रभाव को एक सकारात्मक सामर्थ्य बना सके।

कुछ लोगों के चरित्र में दृढ़ता नहीं होती। इस कमज़ोरी, अनिश्चितता और अयोग्यता पर प्रबल होना ज़रूरी है। वही लोग सामर्थी होते हैं जिनका विरोध किया गया है, जिन्हें हैरान-परेशान किया गया है, और जिनका रास्ता रोका गया है; लेकिन इन्होंने अपने रास्ते में आई रुकावटों को अपने लिए सकारात्मक आशीर्षे बना लिया। उन्होंने स्वावलम्बित होना सीखा। संघर्ष और समस्या ईश्वर में भरोसा करना और ऐसी दृढ़ता सिखाते हैं जो सामर्थ्य को बढ़ाती है।

शैतान आज भी हमारे सामने वही प्रलोभन रखता है जो उसने मसीह के सामन रखे थे: वह हमारी स्वामीभक्ति के बदले हमें संसार के राज्य देने का प्रस्ताव रखता है। लेकिन जो अपने विश्वास के कर्ता और पूरक यीशु की ओर देख रहा होता है, उस पर शैतान का कोई ज़ोर नहीं चलता।

शत्रु के साथ जंगल में हुए मुक़ाबले का जैसा नमूना मसीह ने एक अच्छे नायक के रूप में हमारे सामने रखा है, क्या मनुष्य उसी तरह ईश्वरीय सामर्थ्य को थाम कर, पक्के इरादे और धीरज के साथ, शैतान का सामना करेगा? मनुष्य की इच्छा के बिना ईश्वर उसे शैतान की युक्तियों से नहीं बचा सकते। मसीह की ईश्वरीय शक्ति से मदद पाकर मनुष्य को अपनी मानवीय शक्ति में, हर एक क़ीमत चुकाते हुए, जयवंत होना है। संक्षिप्त में कहें, तो मनुष्य को इसी तरह प्रबल होना पड़ेगा जैसे मसीह हुए थे। और फिर, उस जय के द्वारा जिसे मसीह के सर्वसामर्थी नाम में पा लेना उसके विशेषाधिकार है, वह ईश्वर का उत्तराधिकारी और मसीह का सह- उत्तराधिकारी बन सकता है; अगर सिर्फ मसीह को ही जयवंत होना है, तो हमारे लिए यह कभी नहीं होगा। मनुष्य को अपने हिस्से का काम करना है; उसे मसीह द्वारा दी जाने वाली शक्ति और कृपा से जय पानी है। मनुष्य को जयवंत होने के काम में मसीह का सहकर्मी होना है, तभी वह मसीह में उनके साथ सह-उत्तराधिकारी होगा।

हम मसीह के अनमोल लहू से ऐसे ख़रीदे गए हैं, जैसे एक निष्कलंक मेमने के लहू द्वारा। यह कैसी क़ीमत है- बेजोड़ और असीम! यद्यपि मसीह ने हमें ख़रीदा है, और वे हमें अपने पास बुलाते हैं, फिर भी संसार के आकर्षण हमें प्रलोभित करते हैं, और हम पर प्रभुता करना चाहते हैं। ईश्वर के लिए प्रेम, या संसार के लिए प्रेम, इस संघर्ष में कौन जीतेगा? हमारा शत्रु हमें संसार में घसीट ले जाने के लिए हमारे सामने भी ऐसे ही प्रलोभन रखता है जैसे परखने के समय उसने जंगल में मसीह के सामने रखे थे। अगर हम यीशु की सामर्थ्य पर निर्भर नहीं होंगे जो हमारी पहुँच से बाहर और हमसे बढ़ कर है, तो शत्रु हमें नाश करने में सफल हो जाएगा। लेकिन जब हम मसीह के सामने देखते हैं, उनके जीवन और चरित्र को देखते हैं, और उनके जैसे बनने की इच्छा रखते हैं तो तब हमारे मन में एक अच्छे नायक की छवि उत्पन्न होने लगती है और हम सही दिशा में आगे बढ़ने लगते हैं।

यीशु ने हमसे इतनी मोहब्बत करी कि उसने अपनी जान तक हमारे लिए कुर्बान कर दी। दुनिया के किसी भी नायक ने यह कार्य किसी भी व्यक्ति के लिए नहीं किया जो हमारे यीशु ने हमारे लिए किया। चुनाव हमारा है कि हमारा नायक कौन है? प्रभु हम सबको आशीषित करें।

भाई सुनील कुमार
संपादक

"भारतवर्ष में मसीहियत को ऐसे मज़बूत जवानों की ज़रूरत है जो इस इंतज़ार में नहीं रहेंगे कि पहले उनका रास्ता आरामदेह हो जाए, या उनकी सारी बाधाएं दूर हो जाएं, बल्कि आज ऐसे जवान चाहिए जो हताश हो चुके लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत का कारण बनें।"

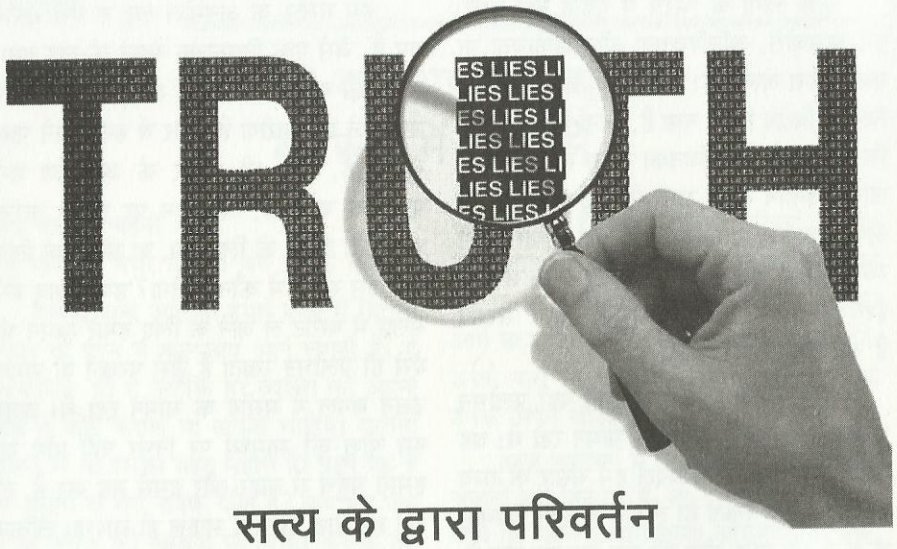

सत्य के द्वारा परिवर्तन

यीशु ने उत्तर दिया: "लिखा है, मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" मत्ती 4:4

- रिक वॉरन

हमें सत्य परिवर्तित करता है। सत्य को झूठ के स्थान पर प्रति-स्थापित करने की प्रक्रिया ही आत्मिक विकास है। यीशु ने प्रार्थना की कि, *"सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।"* पवित्रीकरण के लिए प्रकाशन की आवश्यकता है। परमेश्वर की आत्मा हमें परमेश्वर के पुत्र जैसा बनाने के लिए परमेश्वर के वचन का उपयोग करती है। यीशु जैसे बनने के लिए, हमें अपने जीवन को उनके वचन से भरना आवश्यक है। बाइबल कहती है, *"ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"*

परमेश्वर का वचन अन्य शब्दों से भिन्न है। वह जीवित है। यीशु ने कहा, *"जो बातें मैंने तुम से कही है। वह आत्मा है, और जीवन भी है।"* जब परमेश्वर बोलते हैं, तो परिवर्तन होता है। आपके चारों ओर–सारी सृष्टि का अस्तित्व मात्र इसलिये है क्योंकि *"परमेश्वर ने ये कहा था।"* उन्होंने सबसे अस्तित्व में होने को कहा था। परमेश्वर के वचन के बिना आप जीवित नहीं होते। याकूब ने इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा है, *"उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उसकी सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों।"*

बाइबल सिद्धांत-मार्गदर्शिका से कहीं अधिक बढ़कर है। परमेश्वर का वचन, जीवन देने वाला, विश्वास उत्पन्न करने वाला, परिवर्तन पैदा करने वाला, शैतान को डराने वाला, चमत्कार करने वाला, दु:खों को दूर करने वाला, चंगाई देने वाला, चरित्र निर्माण करने वाला, परिस्थितियों को बदलने वाला, आनन्द प्रदान करने वाला, अभिलाषाओं को हराने वाला, आशा देने वाला, सामर्थ देने वाला,

मन को शुद्ध करने वाला, सब चीजों को अस्तित्व में लाने वाला, और हमारी हमेशा के भविष्य की गारंटी है। परमेश्वर के वचन के बिना हम जी नहीं सकते। इसे कभी भी अन्यथा न लें बल्कि जैसे हमारे जीवन में भोजन जरूरी है इसे भी उसी प्रकार लें। अय्यूब ने कहा कि, *"मैंने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे।"*

परमेश्वर का वचन ही आत्मिक आहार है जो आपके जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए जरूरी है। बाइबल को हमारा दूध, रोटी, सम्पूर्ण आहार और मीठा भोजन कहा गया है। यह चार दौर का आहार आत्मिक बल और विकास के लिए पवित्र आत्मा की विषय सूचि है। पतरस हमें सुझाव देते हैं, *"नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ।"*

परमेश्वर के वचन में बने रहना

आजकल पहले से ज्यादा बाइबल छपती हैं, परन्तु पुस्तकों की अलमारी में रखी बाइबल व्यर्थ है। लाखों विश्वासी आत्मिक अरोचकता से पीड़ित है एवं आत्मिक भोजन की कमी के कारण भूख से मरते हैं। यीशु का स्वस्थ शिष्य होने के लिए, परमेश्वर के वचन को खाना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए। यीशु ने इसे उनमें 'बने रहना' कहा है। उन्होंने कहा है कि, *"यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।"* अपने रोज के जीवन में, परमेश्वर के वचन में बने रहने के लिए तीन बातें जरूरी हैं।

मुझे उनके प्रभुत्व को स्वीकार करना होगा

अवश्य है कि मेरे जीवन का आधार परमेश्वर का वचन अर्थात बाइबल हो: वह दिशा-सूचक यन्त्र, जिस पर मैं दिशा के लिए निर्भर हो सकूँ, वह परामर्श, जिसे सुनकर मैं सही निर्णय ले सकूँ और वह निर्देश चिह्न जिससे मैं प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन कर सकूँ। मेरे जीवन में बाइबल का शब्द ही हमेशा प्रथम और अन्तिम होना चाहिए।

हमारे ज्यादातार कष्टों की वजह हमारे चुनाव का आधार है जो हम अविश्वसनीय बातों पर करते हैं: संस्कृति ("सभी ऐसा कर रहे हैं") परम्परा ("हम तो ऐसा ही करते चले आए है"), कारण ("यह तो तर्क-संगत लगता है"), या भावना ("हमें यह उचित लगा")। ये चारों पतन के द्वारा समाप्त हो जाएंगे। जरूरी है कि हमें एक दोष-रहित स्तर की आवश्यकता है जो हमें कभी भी गलत दिशा में न ले जाये। सिर्फ परमेश्वर का वचन ही इन जरूरतों को पूरा कर सकता है। सुलैमान हमें याद दिलाते हैं कि, *"परमेश्वर का एक-एक वचन ताया हुआ है।"* और पौलुस कहते हैं, *"सम्पूर्ण पवित्र-शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है।"*

अपने सेवा-काल के प्रारम्भिक वर्षों में, बिली ग्राहम के जीवन में भी ऐसा समय आया जब उनको बाइबल की यथार्थता और अधिकार के प्रति अपनी शंकाओं को लेकर संघर्ष करना पड़ा था। एक चाँदनी रात में अपने घुटनों में गिरकर उन्होंने रोते हुए परमेश्वर से कहा कि, इन सारे अस्पष्ट अंशों के बावजूद जो उनकी समझ से बाहर है वे इस पल के बाद बाइबल पर सम्पूर्ण विश्वास करेंगे और अपने जीवन एवं सेवकाई पर सम्पूर्ण अधिकार देंगे। बिली ग्राहम का जीवन असाधारण सामर्थ्य और प्रभाव से आशीषित होता चला गया।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण निर्णय जो आप आज कर सकते हैं वो यह तय करना है कि, आपके जीवन के लिए अन्तिम अधिकार क्या होगा। इसका निर्णय अपनी संस्कृति, परम्परा, तर्क या भावना से हट कर करें, अपने जीवन के अन्तिम अधिकारी के रूप में आप बाइबल को चुनें। निर्णय लेने के पहले हमेशा यह प्रश्न पूछें "इसके बारे में बाइबल क्या कहती है?" संकल्प कीजिए कि जब भी परमेश्वर कुछ करने के लिए कहते हैं, उस समय आप परमेश्वर के वचन पर भरोसा करेंगे और उसी के अनुसार करेंगे, चाहे वह आपको अच्छा लगे या नहीं या फिर आप वैसा करना चाहे या नहीं। अपने व्यक्तिगत विश्वास के प्रतिज्ञा-पत्र के रूप में, पौलुस के इस वाक्य को अपना लीजिए, *"जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब पर विश्वास करता हूँ।"*

मुझे इसके सत्य को अपनाना चाहिए

बाइबल में केवल विश्वास करना ही काफी नहीं है, मुझे अपने दिल-दिमाग को इससे भर लेना है, ताकि पवित्र आत्मा सत्य के द्वारा मेरा परिवर्तन कर सकें। यह कार्य पाँच प्रकार से किया जा सकता है: आप इसे प्राप्त कर सकते हैं, इसे पढ़ सकते हैं, इसकी खोज कर सकते हैं, इसे याद कर सकते हैं और इस पर ध्यान लगा सकते हैं।

पहले, जब आप परमेश्वर के वचन को ग्रहण करते हैं, तब आप उसे एक स्वीकारने के भाव से सुनते हैं। बीज बोने वाले के दृष्टान्त से हम ये पहचान सकते हैं कि परमेश्वर का वचन हमारे जीवन में जड़ पकड़ता है या नहीं और फलदायी होता है या नहीं। यीशु ने तीन प्रकार के अस्वीकार करने वाले स्वभावों को दर्शाया है– संकीर्ण मन (कठोर भूमि), छिछला मन (कम गहरी भूमि), भ्रमित मन (काटों भरी भूमि)–और तब उन्होंने कहा, *"इसलिए चौकस रहो कि तुम किस रीति से सुनते हो?"*

आपको जब भी यह आभास हो कि किसी भी प्रवचन, या बाइबल-शिक्षक से, आप कुछ सीख नहीं पा रहे हैं, तो अपने विचार के भावों को जाँचिये, विशेषकर अभिमान को, क्योंकि जब आप विनम्र एवं ग्रहणशील होंगे तब परमेश्वर सबसे अधिक उबाऊ प्रचारक के द्वारा भी आपसे बात कर सकते हैं। याकूब का सुझाव है, *"उस वचन को नम्रता-पूर्वक ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।"*

दूसरा, कलीसिया के 2000 वर्ष के इतिहास में, जबकि असंख्य लोगों को बाइबल उपलब्ध है परन्तु फिर भी केवल पास्टर ही व्यक्तिगत रूप से बाइबल पढ़ते हैं। इसके बावजूद, कई विश्वासी बाइबल के बदले दैनिक समाचार पत्र पढ़ने के प्रति अधिक विश्वसनीय है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमारा आत्मिक विकास नहीं होता। तीन घण्टे टैलीविजन देखकर और तीन मिनट बाइबल पढ़कर हम अपने आत्मिक विकास की आशा नहीं कर सकते।

अनेक लोग जो बाइबल "को आवरण से आवरण" तक विश्वास करने का दावा देते हैं उन्होंने सच में कभी भी इसे आवरण से आवरण तक नहीं पढ़ा होगा। यदि आप अपनी बाइबल प्रतिदिन मात्र पन्द्रह मिनट पढ़ें तो, आप एक वर्ष में पूरी बाइबल पढ़ लेंगे। यदि आप आधा-घण्टे का एक टीवी कार्यक्रम त्यागकर उसके स्थान पर बाइबल पढ़ें, तो आप एक वर्ष में पूरी बाइबल को दो बार पढ़ लेंगे।

बाइबल रोज़ पढ़ने से आप परमेश्वर की वाणी के पास में रहेंगे। इसी कारण परमेश्वर ने इस्राएल के राजाओं को आदेश दिया था कि वे उनके वचन की एक प्रति हमेशा अपने पास रखें: *"और वह उसे अपने पास रखे, और अपने जीवन भर उसको पढ़ा करे।"* परमेश्वर के वचन को मात्र अपने निकट ही न रखें; बल्कि उसे निरन्तर पढ़ें भी। इसका एक आसान तरीका जो इसमें आपकी मदद कर सकता है वो है 'दैनिक बाइबल पठन योजना।' यदि आप मेरे व्यक्तिगत बाइबल पठन योजना की प्रति प्राप्त करना चाहे तो, परिशिष्ट 2 को देखिए।

तीसरा, बाइबल की खोज करना या अध्ययन करना, परमेश्वर के वचन में बने रहने का एक और प्रयोगिक तरीका है। बाइबल को पढ़ने और अध्ययन करने के अन्तर में दो अतिरिक्त कार्य सम्मिलित है: पढ़े हुए हिस्से में सवाल ढूंढना और अपने विचारों को लिखना। यदि आप अपने विचारों को कागज या कम्प्यूटर पर नहीं लिखते हैं तो समझ लीजिए की आपने बाइबल अध्ययन सच में नहीं किया।

जगह की कमी के कारण मैं विभिन्न बाइबल अध्ययन के दूसरे और तरीकों का वर्णन नहीं कर सकता। बाइबल अध्ययन के तरीकों पर अनेक सहायक पुस्तकें उपलब्ध हैं, इनमें मेरी एक बीस वर्ष पूर्व लिखी पुस्तक भी है। अच्छे बाइबल अध्ययन का रहस्य सिर्फ सही प्रश्नों को पूछना सीखना है। विभिन्न तरीके विभिन्न प्रश्नों का प्रयोग करते हैं। यदि आप अध्ययन के बीच रुक-रुक कर आसान से सवाल जैसे: कौन, कब, कहाँ, क्या, और कैसे, पूछते रहें तो आप बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। बाइबल कहती है, *"पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।"*

परमेश्वर के वचन में बने रहने का चौथा तरीका उनको याद रखना है। आपकी याद रखने की क्षमता परमेश्वर- का दिया हुआ उपहार है। आप भले ही सोचें कि आपकी याद्दाश्त कमजोर है, मगर सत्य तो यह है कि, आपको लाखों विचार, सत्य, तथ्य और आकृतियाँ याद है। जो आपके लिए महत्वपूर्ण है, उसे आप याद रखते हैं। यदि आपके लिए परमेश्वर का वचन महत्वपूर्ण है, तो आप उसे याद रखने के लिए जरूर समय निकालेंगे।

बाइबल के पद्य याद करने के असंख्य लाभ है। ये आपको लालच का सामना करने में, सही निर्णय लेने में, दबाव कम करने में, आत्म-विश्वास बनाने में, सही परामर्श देने में, और दूसरों के साथ अपना विश्वास बाँटने में आपकी सहायता करेंगे।

आपकी स्मरण शक्ति माँस-पेशियों के समान है। आप उसका जितना अधिक उपयोग करेंगे, वह उतना ही अधिक दृढ़ होगी, और वचन को याद करना आसान हो जाएगा। आप इस पुस्तक में से उन पद्यों को जिन्होंने आपके हृदय को स्पर्श किया है चुनकर उन्हें एक छोटे से कार्ड पर लिखकर हमेशा अपने साथ रख सकते हैं। फिर बाद में दिनभर ऊँचे स्वर में पढ़ते हुए उन पर पुन विचार कर सकते हैं। वचन को आप किसी भी स्थान पर याद कर सकते हैं: काम करते समय या व्यायाम करते समय या वाहन चलाते समय या प्रतीक्षा करते समय या सोने के समय। वचन को याद करने की तीन कुन्जियाँ हैं: पुनविचार, पुनविचार और पुनविचार! बाइबल हमें बताती है, *"मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ।"*

परमेश्वर के वचन में बने रहने का पाँचवा तरीका है उसे प्रगट करना। जिसे

बाइबल "ध्यान लगाना" कहते है। अनेक लोगों के लिए ध्यान लगाने का अर्थ है अपने विवेक को निष्प्रभाव करके उसे शून्य में छोड़ देना। यह बाइबल की ध्यान क्रिया के एकदम विपरीत है। आप एक पद्य को चुनते हैं और अपने मन में उस पर बार-बार विचार करते, यही ध्यान लगाना है।

जैसे कि मैंने अध्याय 11 में बताया था कि, यदि आप चिन्ता करना जानते हैं, तो आप ध्यान लगाना भी जानते हैं। जिस प्रकार चिन्ता किसी नकारात्मक विचार पर केन्द्रित हो कर सोचना है, ठीक उसी प्रकार ध्यान लगाना भी है, अन्तर सिर्फ इतना है कि आप अपना ध्यान किसी समस्या पर नहीं परन्तु परमेश्वर के वचन पर केन्द्रित करते हैं।

विधिवत् तरीके से परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाने के अलावा कोई और दूसरी आदत आपके जीवन को बदलकर यीशु के समान नहीं बना सकती। जब हम समय निकालकर परमेश्वर के सत्य पर मनन करते हैं तो हम वास्तविक रूप से मसीह के उदाहरण को प्रस्तुत करते हैं। *"...हम उस तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।"*

यदि आप बाइबल को देखें तो पाएंगे कि परमेश्वर हमेशा ध्यान करने के बारे में बात करते हैं, आप उन लाभों को देखकर आश्चर्यचकित होंगे जिसका वायदा वे दिन भर समय निकालकर उसके वचन पर ध्यान करने वालों को देते हैं। एक कारण जिसके लिए परमेश्वर ने दाऊद को *"एक मनुष्य... मेरे मन के अनुसार"* बुलाया वो ये था कि दाऊद को परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाना अतिप्रिय था। उन्होंने कहा, *"मैं तेरी व्यवस्था से कैसी प्रीति रखता हूँ! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।"* परमेश्वर के वचन पर सम्पूर्ण हृदय से ध्यान लगाना प्रार्थना का उत्तर पाने और सम्पन्न जीवन जीने के रहस्य की चाबी है।

मुझे इन सिद्धान्तों का प्रयोग जरूर करना चाहिए

यदि हम वचन पर अभ्यास करने में नाकाम हो तो वचन को ग्रहण करना, उनको पढ़ना, खोज करना, याद रखना और प्रगट करना सब व्यर्थ है। हमें "वचन पर चलने वाले" बनना जरूरी है। यह सबसे ज्यादा कठिन कदम है, क्योंकि शैतान इससे तीव्रता से लड़ता है। जब तक आप जो कुछ पढ़ें उस पर अमल न करें, तब तक आपके बाइबल अध्ययन के लिए जाने से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

हम अपने आपको धोखा देते हैं जब हम मानते हैं कि सिर्फ सुनने, पढ़ने या सत्य का अध्ययन करने से, हमने उसको प्राप्त कर लिया है। वास्तव में, आप अगली कक्षा या उपकक्षा या बाइबल सम्मेलन में जाने में इतना व्यस्त होते हैं कि आपने जो कुछ सीखा उसे प्रयोग में लाने का समय ही नहीं होता। आप अगले अध्ययन में जाने के रास्ते में उसे भूल जाते हैं। बिना प्रयोग में लाए, हमारे सब बाइबल अध्ययन बेकार है। यीशु ने कहा, *"इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।"* यीशु ने ये भी कहा कि परमेश्वर की आशीष सत्य को सिर्फ जानने से नहीं बल्कि आज्ञा-पालन करने से आती है। उसने कहा, *"तुम ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो तो धन्य हो।"*

इसे हमारे व्यक्तिगत रूप से प्रयोग न करने का एक दूसरा कारण ये भी है कि ये कठिन और पीड़ा-दायक होता है। सत्य जरूर आपको स्वतंत्र करेगा, मगर वह शायद पहले आपको दुखी करे! परमेश्वर का वचन हमारे उद्देश्य को प्रकट करता है, हमारी गलतियों को दिखाता है, हमारे पापों को फटकारता है और हमसे बदलने की अपेक्षा करता है। परिवर्तन का विरोध करना मानव स्वभाव है, इसलिए परमेश्वर के वचन को प्रयोग में लाना बहुत कठिन काम है। इसी कारण आपको अपने व्यक्तिगत प्रयोगों की चर्चा दूसरे लोगों के साथ करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

मैं छोटे बाइबल अध्ययन समूह के भाग होने के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह सकता। हम हमेशा दूसरों के सत्यों से सीखते हैं अपने से नहीं। अन्य लोग परमेश्वर के सत्य को प्रयोगिक तरीके से प्रयोग करने में और अपने अन्दर वो देखने में आपकी मदद करेंगे जो आपने नहीं देखा।

"वचन पर चलने वाले" बनने का सबसे अच्छा तरीका है हमेशा परमेश्वर के वचन को पढ़ने, उसका अध्ययन करने और उसमें ध्यान लगाने के परिणाम के रूप में अपने अगले कदम को लिखना। जो आप करने का इरादा करते हैं उसे वैसे ही लिखने की आदत डालिये। यह कारवाई आपकी व्यक्तिगत (अपने आपको लेकर), प्रायोगिक (जो कुछ आप कर सकते हैं), और निश्चित (उसे करने की समय सीमा के साथ) होनी चाहिए। हर आवेदन में परमेश्वर से आपके सम्बन्ध, दूसरों से आपके सम्बन्ध, या आपके व्यक्तिगत चरित्र को सम्मिलित होना होगा।

अगले अध्याय को पढ़ने से पहले, इस प्रश्न के बारे में सोचिये: परमेश्वर ने अपने वचन में आपसे ऐसा क्या करने के लिए कहा जो आपने अभी तक करना शुरु नहीं किया? फिर उन बातों को लिखें वे उस काम को करने में मदद करेंगी जिन्हें आप जानते हैं। आप अपने किसी मित्र से भी कह सकते जो आपको आपकी जिम्मेदारी बता सके। जैसे डी. एल. मूडी ने कहा, "बाइबल हमारी बुद्धि को बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि हमारे जीवन को बदलने के लिए दी गई है।"

नोट:

यदि पाठकों को ऊपर दिया गया लेख पसंद आया है तो आप इसको विस्तृत रूप से पढ़ने के लिए "उद्देश्य चलित जीवन" नामक पुस्तक को पढ़ें। यह पुस्तक "मसीही साहित्य संस्था" में हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है।

WANTED GROOM

Wanted Groom for B.Com. (Pass), Diploma in Medical Record Technology & Tutor in Medical Record Technology. Presently Working in Pushpanjali Crossley Hospital, Vaishali as a Medical Record Technician. Medical Record Officer Exam Cleared of P.G.I. Chandigarh. Waiting for posting. Age 25, Height 5' 2" Pentecostal Believers, Assembly of God Church.

For more information, Please Contact

Pastor Rati Ram

Mob: 09873306195, E-mail: ratiramwilliam@gmail.com

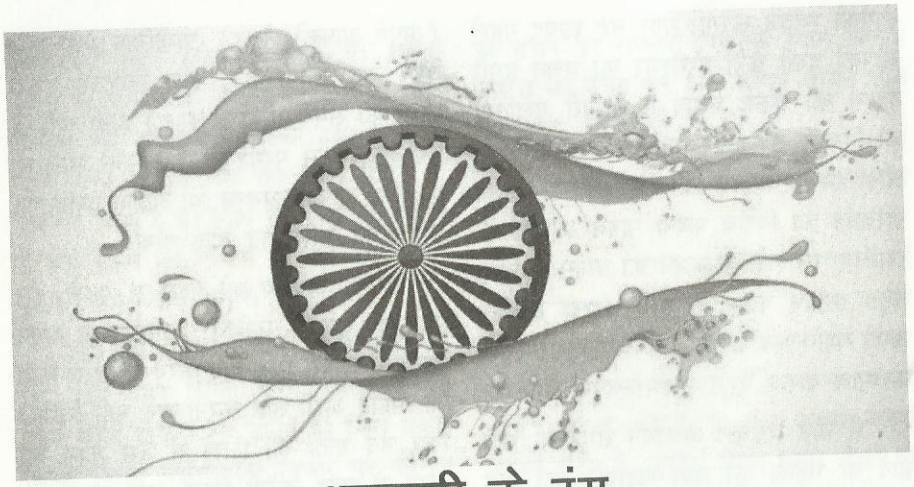

आजादी के रंग

डॉ॰ विश्वास नाथ

धन्य हो उन वीरों का जो देश के नाम कुर्बान हुए। उन शहीदों को सलाम जो भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए मर मिटे पर आज भी हमारे जहन में जीवित हैं। स्कूलों में इन शहीदों की जीवनगाथा पढ़ाई जाती है। यदि आप नहीं जानते तो स्कूल जानेवाले बच्चों से पूछिए... 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने ऐतिहासिक लाल किले (दिल्ली) पर तिरंगा झण्डा फहराया। रंगारंग कार्यक्रम, ड्रिल, परेड इत्यादि ने इस आजादी में चार चाँद लगा दिए। 21 तोपों की सलामी दी गई। लेकिन लॉर्ड माउन्टबैटन 1949 के मध्यावधि तक गर्वनर जनरल बने रहे। सन् 1950 तक किंग जॉर्ज VI भारत के राजा बने रहे। ब्रिटिश सरकार की यह कार्यवाही का कारण यह था कि भारत को धर्म-निर्पेक्ष बने रहने के लिए जब तक संविधान न बन जाए तब तक नियन्त्रण बनाए रखे। जम्मू कश्मीर भारत को दिया गया था पर जम्मू के राजा हर्ष सिंह ने राजपाठ ब्रिटिश को सौंपने से इनकार किया, तब महात्मा गान्धी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, नेहरू जी के हस्तक्षेप से कुछ होने वाला था तभी पंजाब (कश्मीर में है) के जिन्ना लाहोर में उठ खड़े हुए और पाकिस्तान की माँग मनवा ली। बाकि इतिहास है। वन्देमातरम, सत्यमेव जयते जैसे नारे बुलन्द हुए। गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने "जन गण मन अधिनायक जयते" गीत सन् 1911 में कलकत्ता में लिखा था तथा इन्डियन नेशनल कांग्रेस कन्वेनशन में 27 दिसम्बर 1911 को गाया था जिसमें किंगजॉर्ज V ने भाग लिया था।

हमारा संविधान 26 जनवरी गणतन्त्र दिवस 1950 को लागू किया गया था जिसमें प्रत्येक को उसका धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति, विश्वास मानने और प्रसार प्रचार करने की स्वतन्त्रता निहित है। हमारा देश स्वराज्य के तने के समान है जिसकी शाखाएँ स्वदेशी हैं। गान्धी जी ने कहा था, "स्पष्ट रूप से मैंने एक यात्री के समान कार्य किया, परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ।" सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था, "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" बाल गंगाधर तिलक ने कहा था, "हम चाहे जो भी कठिनाई का सामना करें हमें कभी सत्य की खोज करना नहीं छोड़ना चाहिए, जो केवल स्वयं परमेश्वर है।" उस समय के बहुत से महापुरुषों ने "आजादी" पर उद्धरत किए अपने विचार। मार्क टूवेन, अलबर्ट आइन्स्टाईन प्रमुख हैं जिन्होंने अपने निजी अनुभवों से कहा, "एकमात्र सच्चे परमेश्वर में ही सच्ची स्वतन्त्रता मिलती है।"

कारण, आज 21 वीं शताब्दी में भी प्रत्येक देश के लोग किसी वस्तु, व्यक्ति, आदत, सोच, आस्था, सैक्स, नशा, जुआ, बुराई के गुलाम है। दूसरे शब्दों में कहा जाए कि जब तक पृथ्वी पर 'मनुष्य' का पुनरुद्धार न हो जाए वह संसार और उसकी बुराईयों में भटकता रहेगा। "हम" मृत्यु के वश में हैं। बहुत से अभी तक नहीं जानते कि मरने के बाद कहाँ जाएँगे?

संक्षेप में, मुझे अय्यूब (पुराने जमाने का एक खरा मनुष्य) के शब्द बहुत राहत देते हैं: "मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा" (अय्यूब 19:25) "उसका दर्शन मैं आप अपनी आँखों से अपने लिए करूँगा, और कोई दूसरा नहीं" (पद 27)।

यीशु का शिष्य, प्रेरित पतरस लिखता है: परन्तु जैसा तुम्हारा बुलाने वाला (सृष्टिकर्त्ता) पवित्र है, वैसे ही तुम भी पवित्र बनो... क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चान्दी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, परन्तु निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ। उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति से पहले ही से जाना गया था, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिए प्रगट हुआ" (1 पतरस 1:16-21) [पढ़ें यशायाह 18:19; 1 यूहन्ना 1:7-9; 1 पतरस 2:19-25]।

सत्य का आत्मा (परमेश्वर=पवित्र आत्मा) है। "सब सत्य का मार्ग बताएगा।" (यूहन्ना 16:13)

इस पृथ्वी पर हमारे गुलामी के दिन अब नहीं रहेंगे यदि, "हम, उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह में विश्वास करके नए मनुष्य बन जाते हैं"-यूहन्ना 16; 14:26-27)।

आज मैं मन, वाचा, कर्म से आजाद हूँ क्योंकि यूहन्ना 1:12 के अनुसार मैं परमेश्वर की सन्तान बताया गया हूँ अर्थात् परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया गया है। क्या आपको यह अधिकार मिल गया है?

*****

"मैं चाहता हूँ"

1. मैं चाहता हूँ, सबका उद्धार हो।
   सबके जीवन में, सुधार हो॥
   सबका आपस में प्यार हो।
   अच्छी सेहत, और रोजगार हो॥

2. रहें प्रेम से, ना तकरार हो।
   समाज में, ना भ्रष्टाचार हो॥
   डरें प्रभु से, ना कोई बीमार हो।
   सबके पास, अपना घर-बार हो॥

3. सबके पास, अच्छा कारोबार हो।
   सबको आजादी का अधिकार हो॥
   ना कोई दुखी, ना लाचार हो।
   खुशहाल, छोटा परिवार हो॥

4. सबको, यीशु का दीदार हो।
   करो भलाई, नेक विचार हो॥
   आपस में, सब मिलनसार हो।
   करो तौबा, सब गुनहगार हो॥

5. सबका, यीशु सलाहकार हो।
   सबके मन, सदाबहार हो॥
   सबका वह, पालनहार हो।
   बाबा, खिदमत गुजार हो॥

साधु दीवान चन्द

एक और मौका

(फिलेमोन 1:1-25)

-अनूप दास

पिछले अंक का शेष भाग...

आइए हम एक दूसरे को एक और मौका दे क्योंकि हम एक ही परिवार के सदस्य है। यदि आप 15 वी आयत देखें। वहाँ लिखा है, "क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ दिन तक के लिए इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे।" "कुछ दिन तक के लिए" वाक्यांश का यूनानी भाषा में अर्थ है वह तुझ से कुछ समय या पल के लिए अलग हुआ यहाँ तक कि कुछ घन्टों के लिए। इसका अर्थ है कि यह सम्भव है कि परमेश्वर के प्रबन्ध में उनेसुमस फिलेमोन से अलग हुआ ताकि वह सुसमाचार को समझ सके। ताकि वह ज्यादा फिलेमोन के काबिल बन सके। 15 वी आयत में अलग होने का उद्देश्य साफ लिखा है कि "सदैव तेरे निकट रहे" क्यों? क्योंकि वह तेरे मसीही परिवार का सदस्य है। देखने में ऐसा प्रतीत होना बड़ी बात थी। परन्तु परमेश्वर के प्रबन्ध में उनके अलग होने का उद्देश्य था कि वे सदैव एक दूसरे के पारिवारिक रूप से निकट रहे। उनेसुमस का जाना उद्देश्यपूर्ण था। जिसकी वजह से वह मसीही बना।

प्रेरित पौलुस उनेसुमस के अलग हो जाने को बहुत ही हल्का समझते है। वे कहते है, 'चला नहीं गया बल्कि कुछ समय अथवा घन्टों व पल के लिए अलग हुआ।' परमेश्वर के लिए फिलेमोन अथवा उनेसुमस उसके परिवार के सदस्य है।

क्या आपको पुराने नियम के युसूफ की कहानी याद है। उसके अपने भाइयों ने युसूफ को मिस्रियों के हाथ बैच दिया। उसके ऊपर गम्भीर समस्या आयी। वह अपने पिता से वर्षों दूर रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि जो कुछ युसूफ के साथ हुआ वह अच्छा नहीं हुआ। परन्तु बाद में पता चलता है कि उसके पीछे परमेश्वर की योजना थी। परमेश्वर ने युसूफ को अपने परिवार की भलाई के लिए चुना। आइये हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचे जिससे हमें समस्या है सुसमाचार के खातिर उसको हम एक और मौका दे। मसीह के प्रेम को उस पर मौका देने के द्वारा प्रकट करे। फिर देखे कि कैसे परमेश्वर हमारे सम्बन्धों को मजबूत बना सकता है। एक मेरे बचपन का दोस्त है। हम लोग साथ-साथ छात्रावास में पढ़े। हर एक बात के लिए हममें झगड़ा हुआ। हममें कभी भी सहमति नहीं बनी। आपको आश्चर्य होगा कि वही दोस्त 25 वर्षों से मेरा गहरा दोस्त है। हम अपनी चोंटो को छुपाते है तथा बदला लेने की सोचते है। किसी ने कहा है सुबह का भुला अगर शाम को वापिस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। आइये हम एक दूसरे को एक और मौका देना सीखे। क्योंकि हम परमेश्वर के राज्य में सहयोगी है। फिलेमोन उनेसुमस को मौका देने के बाद सहयोगी पुकारता है। व्यवसाय में सहयोगी नहीं बल्कि उनेसुमस अनुग्रह में सहयोगी। उनेसुमस तथा फिलेमोन से उसी मसीह के अनुग्रह का अनुभव महसूस किया। अधिकतर कलीसिया में सहयोगिता सच्ची सहयोगिता नहीं महसूस की जाती बल्कि शहनशील अनुभव हो जाती है। हम सभी मसीह के अनुग्रह का अनुभव करते है। तो भेदभाव कैसा? हम सब मसीह में एक है। पौलुस इफिसियों 4:4 में कहते है कि, "एक ही देह है और एक ही आत्मा, ..." क्योंकि हम सब मसीह में एक ही है। हमें एक ही काम दिया गया है कि हम सुसमाचार का प्रचार करे परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने में सहयोगी बने।

क्या हम दूसरे विश्वासी को अपना सहयोगी समझते है। आइये हम मसीह के प्रेम में एक दूसरे को सहयोगी समझे। क्या हम शान्ति फैलाने में एक दूसरे के सहयोगी हो सकते है? मुझे पता है कि ऊपर लिखी बातें शायद आपको कायल न करे परन्तु एक पल सोचिए मसीह के कार्य को जो उसने क्रूस पर किया? मसीह ने एक और मौका नहीं दिया बल्कि मौके के बाद मौका दिया कि हमारी शान्ति सम्बन्ध परमेश्वर तथा एक दूसरे के साथ अच्छा हो जाए।

परमेश्वर आप सभी को आशीष दे।

*****

शैतान का हमला

प्रकाश का कारखाने में आज पहला दिन था। उसे अपना काम बहुत पसन्द आया। काम के तलाश में ही वह अपना गाँव छोड़कर इस छोटे शहर में आया था। नौकरी मिलते ही प्रकाश कारखाने का सबसे मेहनती और ईमानदार मजदूर माना जाने लगा था। मालिक ने खुश होकर उसे कारखाने के पास ही एक अच्छा कमरा भी रहने के लिए दिलवा दिया था।

प्रकाश अपने जीवन से अत्यधिक प्रसन्न था। कारखाने का काम भी ठीक चल रहा था और दो बार उसके वेतन में भी वृद्धि हो चुकी थी। और उसने हर रविवार को अपने मसीही मित्रों के साथ मसीही साहित्य बांटना भी खूब जोश के साथ शुरू कर लिया था। यही नहीं बल्कि प्रकाश अपने साथ काम करने वाले गैर मसीही दोस्तों को भी हमेशा प्रभु यीशु के जीवन के बारे में बताने का कोई भी मौका नहीं छोड़ता था।

प्रकाश अपने काम और मसीही संगति से बहुत खुश था। सन्डे स्कूल में भी अब चालीस से अधिक बच्चे आने लगे थे। सारी मसीही मण्डली के लोग उसे चाहते थे।

इस प्रकार प्रकाश का जीवन व्यतीत होता जा रहा था। पर शैतान को यह सब पसन्द नहीं था। उससे अपनी हार होती देखी न गई और एक दिन अचानक प्रकाश पर हमला कर दिया।

शहर में धूल भरी लू चलने लगी थी। एक दिन प्रकाश इस लू के चपेटे में आ गया जिसके कारण उसे अस्पताल का सहारा लेना पड़ा घर का सारा सामान लूट लिया गया और उसकी साईकिल भी चुरा कर बेच दी गई जिससे वह चर्च जाया करता था।

जब प्रकाश अस्पताल से स्वस्थ होकर घर आया तो उसने देखा कि उसके घर का कोई भी सामान वहाँ नहीं था। यह देखकर वह उदास हो गया और जब उसको पता चला कि उसकी अनुपस्थिति में सन्डे स्कूल भी बन्द हो गया है तो वह और भी विचलित हो उठा।

अस्पताल से निकलने के प्रथम दिन ही ऐसे दिल तोड़ने वाले अनुभव प्राप्त कर वह सिर पकड़ कर बैठ गया।

कुछ दिनों तक उदास और खामोश रहा। फिर भी प्रतिदिन सबेरे उठकर सबसे पहले बाइबल पढ़ता था। एक दिन जब प्रकाश प्रात:काल अपनी बाइबल पढ़ रहा था तो उसके सामने एक ऐसा पद आया जिस पर उसकी आँखें ठहर गई वह बार-बार उसी पद को पढ़ने लगा।

"परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको" प्रकाश को यह पद पढ़कर एक नया जोश प्राप्त हुआ और उसने परमेश्वर को इस वचन के लिए धन्यवाद दिया और प्रार्थना की, कि "प्रभु मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं शैतान की प्रत्येक आने वाली परीक्षा का सामना आपके सारे हथियार बाँधकर कर सकू।"

प्रकाश को फिर से परमेश्वर की शक्ति प्राप्त हुई और वह अपने काम में लगन और मेहनत के साथ जुट गया। मण्डली वालों ने प्रकाश का फिर से साथ दिया। उसने दुबारा सन्डे स्कूल शुरू किया और शीघ्र ही उसने सताने वालों के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

प्रकाश अपने जीवन से फिर प्रसन्न हो उठा, उसने अपनी गवाही से बहुत लोगों के दिल जीते। जिन लोगों ने मिल कर उसका सामान लूटा था वे लोग प्रकाश के जीवन से खुश हो गए। उन्होंने उसका सामान लौटा दिया और अपनी गलती के लिए उससे क्षमा मांगी।

अब प्रकाश यीशु का एक साहसी गवाह बन गया और शैतान के प्रत्येक हमले के लिए तैयार था क्योंकि अब वह प्रभु के हथियारों से सुसज्जित था।

एन्ड्रू चरन

सह-संपादक

*****

जीवन साक्षी के अगले अंक में प्रकाशित किए जाने के लिए आप हमें अपने लेख, कहानियाँ, कवितायें, जीवन के अनुभव तथा गवाहियाँ आदि अवश्य लिख कर भेजें। पसंद आने पर पत्रिका में शामिल किया जाएगा। कृप्या ध्यान रखें कि प्रकाशक आपके द्वारा भेजे गए किसी भी लेख को छापने के लिए बाध्य नहीं है। जीवन साक्षी पत्रिका के सदस्य बनने के लिए अपने चेक या डिमांड ड्राफ्ट "Masihi Sahitya Sanstha" के नाम से निम्न लिखित पते पर भेजें एवं स्पष्ट लिखें कि धन राशि किस कार्य हेतु भेज रहे हैं:

The Editor
JEEVAN SAKSHI
Masihi Sahitya Sanstha
70, Janpath, New Delhi -110001
E-mail: infojeevansakshi@gmail.com

(लेखक अपने लेखों आदि के प्रति स्वयं उत्तरदायी होगा)

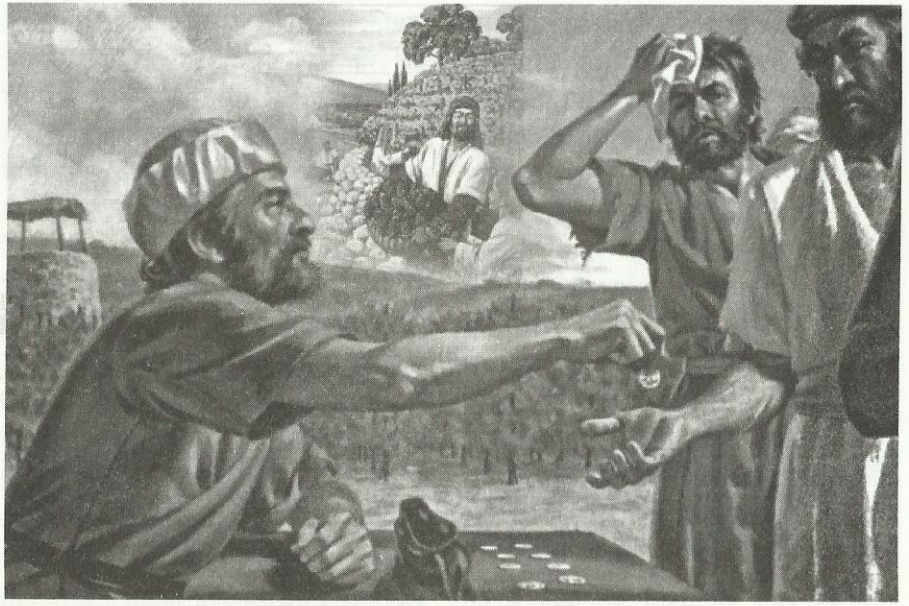

बराबर मजदूरी

मजदूरों को बुलाकर पिछले से लेकर पहलों तक सब को मजदूरी दे दो (मत्ती 20:1-16)

यीशु मसीह मत्ती 20 अध्याय के शुरू में कहते हैं स्वर्ग का राज्य। सचमुच यीशु मसीह हमको यह समझाने के लिए इस दुनिया में आए थे कि यह संसार जो हम देख रहे हैं केवल यह ही नहीं हैं लेकिन यहाँ से सैकड़ों मील दूर एक और दुनिया है एक और राज्य है जिसको स्वर्ग का राज्य कहते हैं, वही से यीशु मसीह आए थे और वापस वही चले गए। परमेश्वर ने यह संसार और पृथ्वी हमारे रहने के लिए बनाई थी (भजन संहिता 115:16)। लेकिन जब मनुष्यों ने पाप किया तब उसने उनको इस पापी जगत से हटा कर अपने साथ स्वर्ग में ही रखने का इरादा किया (यूहन्ना 14:1-2)। वह जगह कैसी है, वहाँ पर क्या-क्या है? इन सब बातों का वर्णन बाइबल में लिखा है। और इस स्वर्ग के राज्य में कौन जा सकता है यह भी बाइबल में लिखा है इसलिए बाइबल खूब पढ़ना चाहिए तब ही स्वर्ग हमारी समझ में आएगा और हमारा ध्यान यहाँ से हटेगा। यीशु मसीह ने कहा कि अपना ध्यान स्वर्ग की वस्तुओं पर लगाओ पृथ्वी की नहीं (कुलस्सियों 3:1-3)।

सचमुच यहाँ ध्यान लगाने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि यहाँ का सब कुछ नाश होने वाला है हमारा शरीर भी 70 या 80 साल में नाश हो जाएगा (भजन संहिता 90:10)। यह मिट्टी का शरीर मिट्टी में मिल जाएगा कीड़े इस को खा जाएंगे (अय्यूब 21:26)। फिर इस शरीर की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए क्योंकि यह तो कीड़ों का भोजन है और जल्द ही कीड़े इसे खा जाएंगे यह शरीर स्वर्ग के राज्य में नहीं जाएगा यह तो 6 फुट के खड्डे में जाएगा फिर इस की चिन्ता क्यों

करनी? इसके अन्दर आत्मा है जो इसमें से निकलकर स्वर्ग में जाएगी उसी की चिन्ता करनी चाहिए। इस दुनिया में हमारा कोई नहीं है सब कब्रिस्तान तक के साथी है इसलिए किसी को अपना नहीं समझना चाहिए। हमारा तो केवल परमेश्वर है जिसने हमको हमारी माँ के गर्भ में रचा, पृथ्वी पर जन्म दिया तथा जन्म से आज तक हमें संभाल रहा है। हमारे दिल की धड़कन उसी के हुकम से चल रही है। सांस का आना जाना उसी की आज्ञा से होता है संसार में रोज लाखों लोग मरते हैं हम जिन्दा है यह उसकी दया है। लाखों बीमार होते हैं हम तन्दुरूस्त हैं यह भी उसकी दया है और यह सब इसलिए है कि हम यहाँ पर रहते हुए अपने आपको स्वर्ग जाने के लिए तैयार करें।

यह स्वर्ग की तैयारी का वक्त है हमें स्वर्ग जाने से पहले पूरी तरह यही पर तैयार होना है जो यहाँ तैयार नहीं होगा वह स्वर्ग में नहीं जाएगा। बच्चा माँ के गर्भ में तैयार होता है अगर वहाँ पर उसकी आँखें नहीं बनी तो इस जमीन पर जिन्दगी भर अन्धा रहेगा। अगर पैर नहीं बने तो जिन्दगी भर लंगड़ा रहेगा। मैं बहुत से ऐसे बच्चों को जानता हूँ जो अपनी माता के गर्भ में पूरी तरह नहीं बन पाए और आज वह इस जमीन पर अपाहिज है और वह अब ठीक नहीं हो पा रहे हैं। इसी तरह अगर हम स्वर्ग के राज्य में जाने के लिए यीशु की तरह यहाँ पर पूरी तरह पवित्र नहीं हुए तो स्वर्ग में नहीं जा सकते (1 यूहन्ना 3:3)।

इसलिए यीशु के खून के द्वारा हर रोज हम यहाँ पर पवित्र बनते जाएं यह ही स्वर्ग जाने की तैयारी है। दुनिया से दिल हटाएं और स्वर्ग से दिल लगाए। हमारे बाप दादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब तम्बूओं में रहते थे उन्होंने पक्का मकान नहीं बनाया और जब उनसे पूछा गया कि पक्का मकान क्यों नहीं बनाते तो उन्होंने जवाब दिया कि हमारा पक्का मकान तो स्वर्ग में बन रहा है (इब्रानियों 9:10)। सचमुच इस दुनिया में कोई भी चीज पक्की नहीं है। एक आदमी मकान बनवा रहा था उसने ठेकेदार से कहा इस मकान की ऐसी मजबूत नेव डालों की सौ साल तक न हिले। सचमुच ठेकेदार ने ऐसा ही किया बहुत मजबूत नेव डाली लेकिन उस मकान की छत भी न पड़ पाई थी कि यह भाई जो मकान बनवा रहा था मर गया। वह मकान आज भी है लेकिन उसका मालिक मकान पूरा होने से पहले ही मर गया। उसको मालूम नहीं था की पक्का मकान बना तो रहा हूँ लेकिन मेरा शरीर ही कच्चा है फिर पक्का मकान से क्या फायदा।

हम सब लोग मकानों में रहते हैं यह हकीकत है लेकिन यहाँ के पक्के मकान सबको छोड़ने हैं। यह भी हकीकत है तो फिर अब क्या करना चाहिए? इसका जवाब एक ही है कि यहाँ से अपना दिल हटाना चाहिए और जो मकान स्वर्ग में हमारा है उसी पर अपना दिल लगाना चाहिए। यीशु मसीह ने कहा जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन है। इसलिए अपना धन स्वर्ग में जमा करो इसका मतलब है कि स्वर्ग जाने के लिए तैयार हो जाओ यह स्वर्ग का राज्य एक गृहस्थ के समान है जो सवेरे निकला कि अपनी दाख की बारी में मजदूरों को लगाए और उन से एक दिनार रोज ठहराकर उनको काम पर लगाया।

हम सब परमेश्वर की दाख की बारी में काम करने वाले हैं और परमेश्वर हमको मजदूरी देने वाला है उस समय एक मजदूर को 12 घन्टे काम करने पर एक दिनार मिलता था। इसके बाद करीब पहर दिन चड़े यानी तीन घन्टे बाद दाख की बारी का मालिक फिर बाहर निकलता है और बाजार में कुछ लोगों को बेकार खड़े देखता है। वह उन से कहता है कि तुम भी मेरे खेत में काम करो जो ठीक होगा मैं तुमको दूंगा और वह

भी जाकर खेत में काम करने लगे। इसके बाद उसने दूसरे और तीसरे पहर के निकट भी ऐसा ही किया यानी 6 घन्टे और 9 घन्टे के बाद भी वह बाजार में जाकर मजदूरों को खड़े देख कर उनको काम पर लगाता है।

इसके बाद जब एक घन्टा बाकी रहा यानी 11 घन्टे बाद भी वह कुछ लोगों को बेकार खड़े देखता है उसने उनसे पूछा की तुम यहाँ दिन भर क्यों बेकार खड़े रहे उन्होंने कहा हमको कोई काम पर लेने को नहीं आया हम पूरे 11 घन्टे से यहाँ पर बेकार खड़े हैं उसने उनको कहा तुम भी मेरी दाख की बारी में काम करो। इस तरह कुछ मजदूरों ने 12 घन्टे काम किया कुछ ने 9 घन्टे कुछ ने 6 घन्टे कुछ ने 3 घन्टे तथा कुछ लोगों ने केवल एक घन्टा काम किया इसके बाद शाम हो गई मालिक ने कहा पिछले से लेकर पहले तक को मजदूरी दे दो। इसका मतलब है सब से पहले जिसने एक घन्टा काम किया है उसको दो और सबको बराबर एक-एक दिनार दो।

एक घन्टे काम करने वाले का तो कुछ हक ही नहीं था। वह तो केवल दया पर ही निर्भर था जब उसको भी एक दीनार मिला जो की 12 घन्टे काम करने वाले की मजदूरी है तो वह बहुत खुश हो गया होगा सब मजदूर बहुत खुश हो गए क्योंकि उनको उनकी मेहनत से ज्यादा पैसा मिला लेकिन जिन्होंने 12 घन्टे काम किया वह गुस्सा हो गये और मालिक पर कुड़कुड़ाने लगे कि हमने दिन भर सख्त मेहनत की धूप सही और तूने उनको भी हमारे बराबर मजदूरी दी जिन्होंने केवल एक घन्टा ही काम किया है। मालिक ने कहा मित्र मैं तेरे साथ अन्याय नहीं कर रहा, तूने मुझसे एक दिनार ठहराया था वह मैं तुझे दे रहा हूँ अपने पैसे ले और जा मेरी इच्छा है कि जितना तुझे दू उतना ही मैं एक घन्टे वाले को दूं यह तो मेरी मर्जी है कि मैं अपने पैसे को किसी को भी कैसे भी दूं। मैं दूसरों के साथ भलाई कर रहा हूँ क्या तुझे यह बुरा लग रहा है।

सचमुच परमेश्वर सबको बराबर प्यार करता है और वह हमारा काम नहीं जरूरत देखता है। हम इन्सान है जिस आदमी से जितनी देर काम कराते हैं उतना ही पैसा देते हैं, उस आदमी की क्या जरूरत है हम यह नहीं देखते। एक बार शाम के समय मैं एक रिक्शा में बैठ कर कही गया उससे पांच रुपये मैंने तय किए और बैठ गया। जब मैं उतरने लगा तो उसको पचास का नोट दिया उसने कहा साहब मेरे पास छुट्टे पैसे नहीं है आज दिन भर मुझे कोई भी भाड़ा नहीं मिला शाम हो गई और आप पहले ग्राहक हो आप छुट्टे पांच रुपये मुझे दे दो। मुझे बाइबल की यह बात याद आई कि परमेश्वर हमारा काम नहीं देखता लेकिन हमारी जरूरत देखता है। बाइबल कहती है कि हम में मसीह का मन है (1 कुरिन्थियों 2:16)।

और मैं सोचने लगा यह बेचारा रिक्शा वाला पूरे दिन रिक्शा लेकर खड़ा रहा परन्तु कोई ग्राहक नहीं आया इस में इसकी कोई गलती नहीं है इसको पूरी मजदूरी मिलनी चाहिए। और मैंने उससे कहा पूरे पचास रुपये ले लो वह बेचारा तो बहुत खुश हो गया। सचमुच जिसने केवल एक घन्टा काम किया और उसको 12 घन्टे की मजदूरी मिली वह कितना ज्यादा खुश होगा। स्वर्ग का राज्य ऐसा ही एक डाकू जिसने यीशु से कहा जब तू अपने राज्य में आए तो मुझे भी याद करना (लूका 23:42-43)। उसी स्वर्ग में यह डाकू तुरन्त चला गया जिस में पतरस, याकूब, यूहन्ना, पौलुस बड़ी मेहनत उठा कर गए। सब को एक ही स्वर्ग में जाना है स्वर्ग हमारी जरूरत है यह सब को चाहिए यह भिखारी

को भी चाहिए, धनवान को भी चाहिए, बड़े-बड़े प्रचारकों को भी चाहिए और विश्वासियों को भी चाहिए। पौलुस जैसा प्रभु का दास जिसने पांच बार उन्तालिस- उन्तालिस कोड़े खाए तीन बार बैतें खाई। मसीह के लिए बहुत दुख उठाया और आखिर में मर भी गया उसी स्वर्ग में मिलेगा जिसमें मैं हम सब जाएंगे जहाँ यीशु बाप के दाहिने हाथ बैठा है वही पर हम भी बैठेंगे यह कितनी खुशी की बात है (प्रका॰ 3:21)।

कोई प्रभु को जल्दी पहचानता है और लम्बे समय तक उसकी सेवा करता है, कोई देर में पहचानता है और थोड़े समय उसकी सेवा करता है। स्वर्ग में दोनों बराबर है। साधु सुन्दर सिंह 15 साल की उम्र में यीशु के पास आया और पूरा जीवन उसके लिए कुर्बान कर दिया। कोई साठ साल में प्रभु के पास आता है सबका प्रतिफल बराबर है। इसलिए हम को पूरी मेहनत से प्रभु के काम में लगा रहना चाहिए हमको दो काम करना है पहले उसके लहू के द्वारा हमको सिद्ध बनना है (मत्ती 5:48)। फिर उसकी सेवा मे लगना है दूसरों को यीशु के बारे में बताना है। हमारा कोई हक नहीं है हम उसकी दया पर निर्भर है। सचमुच हम सच्चे परमेश्वर की खोज में थे बेकार इधर-उधर घूमकर अपना समय बरबाद कर रहे थे परन्तु एक दिन सचमुच यीशु हमें मिल गया और हमारा जीवन बदल गया बहुत देर में मिला फिर भी मिल तो गया। अब आप इस सच्चे मार्ग में तन मन धन लगाकर आगे बढ़ते जाएं आपका परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है (1 कुरि. 15:58)। बाकी सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है (सभोपदेशक 1:14)।

जिस तरह कोई हवा को नहीं पकड़ सकता, उसी तरह कोई भी संसार की किसी भी चीज को अपना नहीं कह सकता हम सब एक दिन मर जाएंगे सब कुछ यही रह जाएगा शरीर मिट्टी में चला जाएगा लेकिन जिसने यीशु के द्वारा अपना सम्बन्ध परमेश्वर से जोड़ा है और लगातार हनोक की तरह परमेश्वर के साथ चलता है (उत्पत्ति 5:22)।

वह मरने के बाद सीधा स्वर्ग में जाएगा और सब बातों के साथ यीशु के साथ स्वर्ग में सिंहासन पर बैठेगा। यदि अभी तक आपने अपना सम्बन्ध यीशु के लहू के द्वारा परमेश्वर से नहीं बनाया है तो आज मौका है इस अवसर को हाथ से न जाने दे उसके खून से अपने पापों से छुटकारा पाए और अपना आत्मिक जीवन बनाने में लग जाए। अगर आज ही यीशु आ जाए तो आप भी हमारे साथ स्वर्ग में जाएंगे और जो कुछ स्वर्ग में सब को मिलेगा वह आपको भी मिलेगा। अगर आप उसके खेत में पहले से काम कर रहे हैं तो पूरी मेहनत से काम करते रहे जो भी काम प्रभु ने आपको सौंपा है छोटा हो या बड़ा सब का प्रतिफल बराबर है जिस प्रकार परमेश्वर सब को बराबर दो हाथ दो पैर दो आँख दो कान तथा पूरा शरीर एक सा देता है।

उसी प्रकार स्वर्ग में भी वह सबको बराबर प्रतिफल देता है उसके यहाँ कोई छोटा बड़ा नहीं वहाँ पर कोई पक्षपात नहीं मेरी यह प्रार्थना है कि हम सब पूरी मेहनत से अपने आपको चौबीस घन्टे पवित्र रखें। और यह पवित्रता का संदेश दूसरों तक पहुचाए तब हम सब स्वर्ग में मिलेंगे और वहाँ पर हमेशा-हमेशा साथ रहेंगे यीशु परमेश्वर और सब पवित्र लोग भी हमारे साथ रहेंगे सचमुच यह सबसे खुशी की बात है कि हम सब अनन्त दण्ड से बच कर स्वर्ग के राज्य में अनन्त काल तक आनन्द मनाए (मत्ती 25:46)।

-डेविड सिंह

मसीही साहित्य संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की मूल्य सहित सूची

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य	आवश्यकता	कुल मूल्य
1.	अनन्त जीवन की ओर	40		
2.	आत्मिक नेतृत्व	50		
3.	बेदारी के गीत	35		
4.	बलिदान	45		
5.	बाइबल टीका	450		
6.	बाइबल डिक्शनरी	400		
7.	बाइबल के सौ महत्वपूर्ण अध्ययन	200		
8.	बाइबल अनुक्रमानिका (कोन्कोरडेन्स)	150		
9.	बाइबल के प्रमुख सिद्धांत	145		
10.	बाइबल सर्वे	400		
11.	बाइबल चिल्ड्रन बुक (प्रतिज्ञा)	60		
12.	हम सब गवाह हैं	35		
13.	इस्राएल का जीवन और सेवकाई	120		
14.	जंगल डॉक्टर की कहानी	20		
15.	जंगल डॉक्टर गैंडे की कहानी	20		
16.	जंगल डॉक्टर बंदर की कहानी	20		
17.	जंगल डॉक्टर दरियाई घोड़े की कहानी	20		
18.	नया जन्म	10		
19.	मध्यस्थता की प्रार्थना	45		
20.	नर्स की परीक्षा	15		
21.	नई बेदारी के गीत	200		
22.	नास्तिक (हिन्दी)	60		
23.	नास्तिक (अंग्रेजी)	75		
24.	परमेश्वर की खोज	40		
25.	परिवार	150		
26.	प्रतिदिन प्रात:काल मनन (स्पर्जन)	175		
27.	पंडित रामा बाई	40		
28.	प्रभु यीशु का पुन: आगमन	75		
29.	प्रार्थना पथ पर	25		
30.	प्रार्थना	30		

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य	आवश्यकता	कुल मूल्य
31.	सच्ची शान्ति की खोज	40		
32.	सच्ची शिष्यता	45		
33.	सितारे के पीछे	20		
34.	सात भयंकर पाप	30		
35.	क्रूस के सात वचन	35		
36.	विलियम कैरी	40		
37.	वैदिक मोक्ष यात्रा	75		
38.	विश्वास और बपतिस्मा (हिन्दी)	25		
39.	विश्वास और बपतिस्मा (अंग्रेजी)	20		
40.	साधु सुन्दर सिंह	25		
41.	नारायण वामन तिलक	15		
42.	फिलिप्पियों के नाम	60		
43.	उत्कृष्ट पवित्रीकरण संदेश रूपरेखा	45		
44.	जीवन क्रांति	20		
45.	मीमोसा	45		
46.	एक मसीही विश्वासी का जीवन	40		
47.	परमेश्वर के साथ चलना सीखना	85		
48.	बेनहूर	60		
49.	आग से उत्तर देने वाला परमेश्वर	60		
50.	पवित्र शास्त्र और भारतीय संस्कृति	45		
51.	डॉक्टर ग्रेस ऑफ बुन्देलखंड	25		
52.	नरक	200		
53.	मसीही धर्म का उदय	60		
54.	सन्तों के लिए सुरक्षा उपाय	100		
55.	परपस ड्राइवन लाइफ (अंग्रेजी)	200		
56.	प्रेरितों के काम (व्याख्यात्मक प्रस्ताव)	140		
57.	परपस ड्राइवन लाइफ (हिन्दी)	200		
58.	परिवर्तन	150		
59.	उत्पत्ति (व्याख्यात्मक प्रस्ताव)	120		

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य	आवश्यकता	कुल मूल्य
60.	ज्योति जगत की	25		
61.	भारतीय ब्रह्मज्ञान	25		
62.	मिट्टी से सोना	60		
63.	मसीही सेवकों के लिए (बिली ग्राहम)	200		
64.	भारतीय कलीसिया के इतिहास की...	25		
65.	बाइबल का सामान्य ज्ञान	100		
66.	मसीही शिक्षक और उसकी शिक्षाएं	60		
67.	चुनौती	50		
68.	105 प्रश्नों का प्रभु यीशु द्वारा उत्तर	150		
69.	प्रभु यीशु की नींव पर बना कलीसियाई...	150		
70.	मोक्ष (हिन्दी)	40		
71.	नये रास्ते (मुस्लिम मिनिस्ट्री)	150		
72.	व्यवस्था बनाम मोक्ष	135		
73.	वचन का प्रचार कर	150		
74.	अनन्त जीवन (गॉस्पल ऑफ जॉन)	150		
75.	द शेफर्ड (अंग्रेजी)	75		
76.	पाप का अभिशाप	150		
77.	परमेश्वर के राज्य की प्राथमिकताएं	145		
78.	सद्गुरु यीशु और उसकी शिष्यता	135		
79.	नेतृत्व करना सीखना	90		
80.	हसीन धोखा	40		
81.	स्तुति और आराधना के गीत	45		
82.	सुसमाचार (व्याख्यात्मक प्रस्ताव)	75		
83.	तू जो आसमान में है	45		
84.	अंधेरों से दूर	95		
85.	प्रेम, यौन और विवाह	60		
86.	पुनरुत्थान का प्रमाण	20		
87.	उसकी सर्वसत्ता के लिए (प्रतिदिन की रोटी)	150		
88.	स्तुति और आराधना	45		
89.	सर्व-प्रिय गीत	80		
90.	सीफी सन्डे स्कूल मटेरियल (13 किताबें)			

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य	आवश्यकता	कुल मूल्य
91.	सचित्र बाइबल	150		
92.	स्वर्ग के रहस्य पृथ्वी पर	75		
93.	मैंने तुमसे विवाह किया	90		
94.	आराधना भजनावली	200		
95.	मिशन में बच्चे और युवा साझेदार...	150		
96.	प्रेम लाल का दिल (ट्रैक्ट)	5		
97.	सब मनुष्य जानें - ट्रैक्ट (हिन्दी-अंग्रेजी)	5		
98.	परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया बढ़े	160		
99.	मसीही जीवन के उन्नति के सिद्धांत	120		
100.	परमेश्वर के अनुग्रह से वृद्धावस्था में...	70		
101.	नबी आमोस की पुस्तक (टीका)	100		
102.	अय्यूब का ग्रंथ (भूमिका एवं टीका)	75		
103.	बाइबल भाष्यशास्त्र (सिद्धांत और पद्धति)	125		
104.	इस्राएल का भौगोलिक अध्ययन और बाइबल	75		
105.	परमेश्वर से सामना	75		
106.	तेरा राज्य आए	135/-		
107.	उलगुलान	100/-		
108.	विश्वास, आशा और प्रेम	175/-		
109.	उद्देश्य चालित कलीसिया (नया संस्करण)	200/-		
110.	सरल सुधारित धर्म-विज्ञान	105/-		
111.	Why Your Mind Matter	150/-		
112.	यीशु के दृष्टान्त (संडे स्कूल)	100/-		
113.	यीशु के चमत्कार (संडे स्कूल)	100/-		
114.	बाइबल के बच्चे (संडे स्कूल)	100/-		
115.	क्रूस पर से... प्रभु यीशु की सात अनमोल...	50/-		
116.	आरंभ	105/-		

नोट: पुस्तकों के मँगाने हेतु अपना चैक या ड्राफ्ट "मसीही साहित्य संस्था" के पक्ष में लिखें एवं नीचे दिए हुए पते पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजें।

प्रबन्धक

मसीही साहित्य संस्था

70 जनपथ, नई दिल्ली-110001

Ph: 011-23320253, 23320373

ई-मेल: mssjanpath@gmail.com, infojeevansakshi@gmail.com

साधु की गुफा

(एक डाकू की सच्ची कहानी)

– एमी कार्माइकल

सुबह-सुबह एक दिन जब 'उद्यान-भवन' के लोगों ने अखबार में छपा एक पत्र पढ़ा तो उनका हृदय उल्लास से भर गया और वे बड़े आनन्दित हुए। उसमें लिखा था कि राज के शर्त के आधार पर क्षमा करने के सम्बन्ध में अधिकारियों को विचार करना चाहिए। उसमें यह परामर्श भी था कि वह 'उद्यान-भवन' में भेज दिया जाए। यह सब न हो सकने पर उसे अपने चरित्र का प्रमाण देने के लिए अवसर दिया जाए। उस पत्र में आगे को दो आदमियों की बातचीत थी जो ट्रेन की प्रतीक्षा करते हुए आपस में बातचीत कर रहे थे।

"राज ने एक दिन मेरे परिवार के साथ बड़ा ही दयापूर्ण व्यवहार किया। मेरे अपने चचेरे भाई की शादी से सारे परिवार को लेकर मैं अपने गांव को वापस लौट रहा था। एकाएक डाकूओं के एक झुण्ड ने जो अत्यन्त भयानक लग रहे थे हमारी बैलगाड़ी को रोक दिया। आधी रात हो चुकी थी और हम लोग उस जंगल के रास्ते से गुजर रहे थे जहाँ अक्सर 'जम्बुलिंगम' छिपा रहता है। यों भी हम बहुत ही डरे हुए थे क्योंकि हमने 'जम्बुलिंगम' और उसके साथियों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था।"

"शीघ्र ही उनमें से जो हट्टा-कट्टा था आया और उसने बैलों को रोक दिया और शेष डाकू गाड़ी पर सवार होकर हमारी चीजों की तलाशी लेने लगे। वे स्त्रियों से गरजकर हार खोल देने के लिए कहने लगे। डर के मारे सब स्त्रियाँ अपने-अपने हार और मंगलसूत्र आदि खोलने लगीं। सब स्त्रियाँ जोर-जोर से चिल्ला रही थीं।" डाकूओं के सरदार ने कहा, "मैं जम्बुलिंगम हूँ।"

"तब उसी मार्ग के दूसरी ओर से किसी के पुकारने की आवाज़ आई। थोड़ी देर बाद एक आदमी दो साथियों को लेकर आया।" उस आदमी ने कहा, "ओ! अगर तुम 'जम्बुलिंगम' हो तो बताओ कि मैं कौन हूँ?" तब उसने उन लोगों को खदेड़ दिया। वे लोग उसे देखकर बहुत ही डर गए थे। उसने उन लोगों से सारे गहने छीनकर स्त्रियों को लौटा दिए। फिर उसने कहा, "मैंने आज तक किसी स्त्री पर हाथ नहीं लगाया और न अपने किसी साथी को मैं ऐसा करने देता हूँ।" भूखा होने के कारण उसने कहा, "अगर तुम्हारे पास कुछ चावल हैं तो दो।" उसने हमें बताया कि अब वह मसीही हो गया है। इससे पहले मैंने उसे कभी नहीं देखा था।

इस पर दूसरे ने जो अब तब इन बातों को सुन रहा था उससे पूछा, "तो क्या तुम भी मसीहियों के मित्र हो।"

इस पर उसने उत्तर दिया: "हाँ अब मैं उनका मित्र बन गया हूँ। मैंने ही उसे चावल दिया था, वह लंगड़ा रहा था इसलिए मैंने उसके पैर के बारे में पूछा। वह बताने पर ही था कि एकाएक रूक गया और बड़े ध्यान से कुछ सुनने लगा। लालटेन के प्रकाश में उसके मुंह पर निराशा की झलक साफ-साफ

दिखाई दे रही थी। इस अचानक परिवर्तन के कारण मैं डर गया। वह मुस्कराया और मेरे कुछ कहने तक अन्धकार में ओझल हो गया।"

दूसरे आदमी ने उससे पूछा, "वह अब कहाँ रहता है? क्या तुमने अब उसके सम्बन्ध में कुछ सुना?"

"मैं नहीं जानता कि वह कहाँ रहता है। पर पास-पड़ोस वालों से मैंने उसके बारे में बहुत कुछ सुना है। मैंने सुना है कि अब वह चोरी नहीं करता। लोग अब उससे प्रेम करते हैं और उस पर तरस खाते हैं। उसके बहुत से शत्रु हैं। उसके पीछे भेदिए लगे रहते हैं जो बाहर से ऐसे मालूम पड़ते हैं मानो उसके अन्तरंग मित्र हैं। उसको कई बार अपने दुश्मनों से बदला लेने का अवसर मिला पर उसने कभी ऐसा नहीं किया। कहते हैं कि उसने मसीहियों के परमेश्वर की सौगन्ध खाकर प्रतिज्ञा की है कि अब वह आगे हत्या नहीं करेगा और न चोरी करेगा।"

उस अनजाने मित्र ने अपने पत्र के आखिर में बहुत ही आग्रह किया था कि जम्बुलिंगम को बचाने के लिए अवश्य कुछ-न-कुछ किया जाए।

सात गुफाओं वाली पहाड़ी में छिपे राज और छोटू फिर आत्म-समर्पण की बातें कर रहे थे। इस पर भी वे उन रहस्यमय रूकावटों के कारण सफल न हो सके। 'उद्यान-भवन' की मिशनरी महिला से सम्पर्क स्थापित करके लोगों ने कहा कि वह राज को बुलाने का प्रयत्न करे। उन्होंने कहा कि अब वे सब भेदिए जो उसे फंसाने के लिए लगाए गए हैं हटा दिए जाएँगे। उस पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया जाएगा। यहाँ तक कि उसे बेड़ियाँ भी नहीं पहिनाई जाएँगी। इन बातों के अतिरिक्त और भी बहुत सी प्रतिज्ञाएँ की गई। वह राज से सम्पर्क स्थापित करने को तैयार ही थी कि कुछ लोगों ने जिनकी ईमानदारी के बारे में उसे सन्देह न था उसे बताया कि यह सब केवल एक षड्यन्त्र है। अत: उसने कुछ भी करने से इन्कार कर दिया। षड्यन्त्रकारियों को हराना आसान काम न था। चार दिन के पश्चात् 'उद्यान-भवन' वालों को एक पत्र मिला। उसमें लिखा था कि राज की खोज करने वाली टुकड़ी वापिस बुला ली गई थी पर इस टुकड़ी के वापिस आते ही एकाएक डकैती पड़ी और कहते हैं कि उसमें राज और छोटू का हाथ है। क्षण भर में ही चारों तरफ इस प्रकार की अफवाह फैल गई और इसका प्रतिरोध कोई भी नहीं कर सकता था। मिशनरी महिला और बहुत से दूसरे लोग जानते थे कि यह सब झूठ है। अफवाह थी कि जब तक पहाड़ी की तलहटी में चौकी बिठाई गई कुछ भी नहीं हुआ पर ज्योंहि चौकी हटा दी गई राज और छोटू ने एकदम डाका डाला। तब मिशनरी महिला ने किसी ऐसे आदमी का पता लगाने की चेष्टा की जो उस चोरी के अवसर पर जिसे राज के मत्थे पर मढ़ा जा रहा था उसके साथ रहा हो। बहुत परिश्रम करने के बाद आखिर ऐसा आदमी मिल ही गया। उस आदमी का बड़ा स्वागत हुआ।

"जी हाँ! मैं ही गीर हूँ।" बुढ़ापे के कारण कमजोर हाथों की मुट्टियाँ कसते हुए उसने कहा, "राज उस वक्त पहाड़ी पर सात गुफाओं वाली घाटी में था। मैंने और बहुत से कोयले बनाने वालों ने भी उसे देखा। जिस दिन चोरी हुई थीं उस दिन और उसके बाद भी हमने उसे वहीं देखा। उस हफ्ते भर वह वहाँ से कहीं नहीं गया था। यह सब कितना झूठ है!"

इस सारी घटना के घटित होने के कुछ ही दिन बाद राज और छोटू ने भी इसके बारे

में सुना और वे बहुत डर गए। वे जानते थे कि निरपराध होने पर भी कितनी आसानी से यह सारा अपराध उनके ऊपर ही मढ़ा जा सकता है। इस पर भी उन्होंने अपनी आशा न खोई जिन लोगों पर राज और छोटू सदा भरोसा रखते थे उन्होंने सप्ताह भर उनको प्रतिदिन वहीं देखा था। गीर भी उन लोगों में सम्मिलित था। वह अच्छी तरह जानता था कि वे कहाँ-कहाँ रहते हैं और कहाँ-कहाँ जाते हैं। राज और छोटू भी जानते थे कि आत्म-समर्पण करने पर यह लोग ही उनकी तरफ से गवाही देंगे।

तब फिर से योजना बनाई गई कि पहाड़ी के निकट ही एक गाँव को घास से लदी एक बैलगाड़ी भेजी जाएगी आधे रास्ते में किसी खास स्थान पर राज और छोटू उस बैलगाड़ी पर सवार हो जाएँगे। इस प्रकार घास के बीच छिपा कर उन्हें सुरक्षित रूप से 'उद्यान-भवन' पहुँचा दिया जायेगा। तभी भयंकर वर्षा प्रारम्भ हुई और उसी वर्षा में एक सन्देशवाहक पहाड़ी की तरफ से आया। "राज बहुत बीमार है, उसे बुखार है। क्या कुछ दवा ऊपर भेजी जा सकती है?" पर वर्षा के कारण नदी में बाढ़ आ गई थी और पहाड़ी पर चड़ने के सारे रास्ते बन्द हो गये थे जिसके कारण दवा भेजना और भी मुश्किल हो गया था। भयंकर रूप से उछलती हुई नदी के ऊपर पहाड़ी पर राज इतना बीमार हो गया था कि हिल-डुल भी नहीं सकता था। फिर राज जिस जगह रहता था वहाँ से करीब सोलह मील की दूरी पर एक और डाका पड़ा। यह डाका भी राज और छोटू के मत्थे ही मड़ा गया। अवश्य ही कोई आदमी था जो राज की तरह लूट-मार कर रहा था। संभवत: वह राज से मिलता-जुलता रहा हो। राज की लड़की आनन्दी को एक दिन किसी एक आदमी को देखकर जो राज से मिलता-जुलता था धोखा हो गया था। उस समय शाम की गोधूली में वह 'उद्यान-भवन' के कुछ बच्चों के साथ बाहर खेल रही थी। उस आदमी को देखकर ही वह चिल्ला उठी, "पापा! मेरे पापा।" पर वह तो कोई और दूसरा ही आदमी था।

वर्षा रुक गई, नदी का पानी भी घट गया और इस डकैती की खबर भी राज के पास पहुँची। राज ने कहा, "यह सब जो हो रहा है अत्यन्त ही रहस्यमय है इसमें कुछ-न-कुछ भेद अवश्य है।" कुटिलता से भरी धमकी का एहसास करके राज अत्यन्त भयभीत हो उठा। फिर कुछ दिनों तक आत्म-समर्पण की कोई बात न उठी।

राज और छोटू के दिन बड़ी कठिनाई से बीत रहे थे। वे न तो डाका ही डाल सकते थे और न ईमानदारी से जीविका कमाने के लिए कहीं काम ही कर सकते थे। खुले आम बाहर निकलना अब उनके लिए बहुत ही खतरनाक बात हो गई थी। अत: वे गरीबी में दिन गुजारने लगे यहाँ तक कि कभी-भी उनके पास खाने को बहुत ही कम रह जाता था।

तब परिस्थिति को और भी गम्भीर बनाने के लिए किसी ने जाकर राज के कान में फुसफुसाना शुरु कर दिया कि, "मिशनरी महिला ने तो तुम्हें त्याग दिया है। उसका विश्वास है कि तुमने क्रोध में आकर उन्दू मूषक को मार डाला है क्योंकि वह तुम्हें धोखे से विष पिलाने गया था। वह यह भी सोचती है कि छोटू ने और तुमने फिर से डाके डालने शुरु कर दिया हैं, उसने तुम्हें त्याग दिया है अब वह तुम्हारे लिए प्रार्थना नहीं करती।"

राज ने सब बातें ध्यान से सुनी। उसके मुंह पर भिन्न-भिन्न भावनाएं बनती और फिर

मिटती जा रही थीं। उसने अपनी मुट्ठियाँ कसते हुए कहा, "नहीं! यह कभी नहीं हो सकता है कि वह मुझे त्याग दे।"

"वह तो अंग्रेज है! इस बात को मान जाओ! तुम उसे माँ कहते हो। क्या माँ अपने मुसीबत में पड़े बच्चे की चिन्ता नहीं करती? क्या उसने कभी तुम्हें एक आना या छः नए पैसे की कीमत का चावल भेजा?"

राज को लगा कि वह आदमी ठीक ही कह रहा है यद्यपि उसने छोटू को यह बात कभी नहीं बताई वह नहीं समझ पा रहा था कि उसने जिसको बड़े प्रेम से अपने हृदय में माता का स्थान दिया वह संकट में पड़े अपने पुत्र के प्रति माँ का कर्त्तव्य पूरा क्यों नहीं करती कुछ रूपए देना क्या उसके लिए बहुत बड़ी बात हो जाती? बेचारे राज को क्या पता था कि मिश्नरी महिला चाहने पर भी उसे सहायतार्थ कुछ नहीं भेज सकती। अगर भेजे तो कानून के अन्तर्गत अपराधी की सहायता करने का दोष उस पर आ जाता और उसका परिणाम होता कि सम्पूर्ण बच्चों सहित सारे 'उद्यान-भवन' का कानून की लपेट में आ जाना।

राज और छोटू ने वास्तव में अपने को परित्यक्त समझा और वे साधु की गुफा की ओर चल दिए। यह गुफा घाटी से लगभग एक मील ऊपर है, जहाँ नदी रंगीन चट्टानों के ऊपर से बहती है। वर्षा से भीगे जंगल के ऊपर धवल रंग का कोहरा छाया था और वे वहाँ अकेले और सुनसान पड़े हुये थे। जल की बूदें टपकती डालियों के ऊपर से किसी भी पक्षी के बोलने की आवाज़ नहीं आ रही थी। नदी के एकरस कल-कल निनाद के मध्य जल-प्रपातों की एक दूसरे को पुकारने की-सी ध्वनि से वायुमण्डल गूंज उठता था। दुःखी और निराश हृदय लिए तीव्र गति से गर्जन करता हुआ जल भी उत्साह प्रदान नहीं करता पर ऐसा मालूम होता था कि धमकी दे रहा हो। गुफा की दीवार और छत गीलेपन के कारण रिस रहे थे और जब उन्होंने भीतर झाँक कर देखा तो सिर्फ जम्हाई लेता हुआ धुंधलापन ही दिखाई दिया। उनके पैरों के नीचे की भूमि भी गीली थी।

यह बड़ी ही अजीब गुफा थी। ऐसा लगता था कि भूत-प्रेत आदि अदृश्य शक्तियों का वहां डेरा था। एक भारी भरकम चट्टान जो कि लगभग सौ फुट लम्बी और अत्यन्त चौड़ी तथा मोटी थी नदी के किनारे पड़ी अन्य चट्टानों में फंस कर खड़ी थी। इन चट्टानों के कारण यह गुफा चार भागों या कमरों में बंटी थी। एक कमरे के किसी गहरे गड्ढे से होकर पानी का बाहर को निकास था। इससे कमरे में शीतल और गीली हवा भर जाती थी। सुरक्षा की दृष्टि से यह गुफा अत्यन्त ही उत्तम थी। पर यह गुफा सदा अपराधियों का गढ़ ही नहीं रही थी क्योंकि कभी यहाँ एक साधु भी रह चुका था। अब वह वहाँ से कहीं चला गया और कोई नहीं जानता कि कहाँ गया है। वर्षा की समाप्ति से पूर्व जब राज और छोटू वहाँ पहुँचे तो उसमें कोई भी न था।

दुःख और नैराश्य से भरा राज उस दिन गुफा के अन्धकार में बैठा हुआ था। निराशा की गहनता में उस दिन उसने वह काम किया जो पहले कभी नहीं किया था। उसने अपनी गीत की किताबों को एक ओर धकेल दिया। अपने चारों ओर गुफा की दीवारें उसे नैराश्य की प्रतीक मात्र दिखाई पड़ रही थीं। यही फुसफुसाहट कि, "मिश्नरी महिला का विश्वास तुम पर से हट गया है" उसकी आत्मा की तह तक पहुँच गई थी जिसके कारण स्वयं उसके अपने विश्वास की नीवं ही हिल गई थी।

वह सिर्फ यही सोचता था कि, "कोई उसे परख कर देखने वाला नहीं कि सचमुच वह भूसा है या अनाज का असली दाना।"

मनुष्यों में उसे शान्ति देने वाला कोई न था और उसे लगता था कि स्वर्ग से आने वाली शान्ति उससे बहुत दूर है। वर्षा शुरु हो गई थी। राज ने मन में फिर वही गुप्त संघर्ष छिड़ने लगे, छोटू उस आग के निकट जो कि दोनों की शांति का एकमात्र सहारा थी पाल्थी मारे बैठा खाना पकाने की चेष्टा कर रहा था। अन्त में निराश तथा दुःखी हृदय राज को एक ज्योति दिखाई दी और एक छोटी-सी आवाज़ सुनाई पड़ी। उस आवाज ने उसके लिए बहाए गए रक्त और तोड़े गए शरीर की याद उसे दिलाई। वह उठा। उसे सिर झुका कर खड़ा होना था अन्यथा गुफा की छत से चोट लगती। पर वह उठा और अपने कन्धों को झुकाते हुए इस प्रकार छोटू से बात करने लगा मानों वह सब कुछ समझ रहा है। उसने कहा, "भले ही वह हमें पतित समझे पर हम नहीं करेंगे। हमने अपने पैर धोए हैं अब उन्हें कीचड़ में नहीं डालेंगे।"

यह उसका अन्तिम और दृढ़ निश्चय था। वह अपने निश्चय पर स्थिर रहा। जिसने फुसफुसाकर उसके मन में सन्देह पैदा करने की कोशिश की थी वह अन्त में हार गया।

आगे की कहानी अगले अंक में...

*****

"हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती"

हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती
लहरों से डर कर नैया पार नहीं होती।

नन्ही चींटी जब दाना ले कर चलती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़ कर गिरना, गिर कर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा-जा कर खाली हाथ लौट आता है
मिलते न सहज ही मोती पानी में
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक सफल हो, नींद चैन से त्यागो तुम
संघर्ष करो मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती।

दैनिक बाइबल पाठ

जुलाई

रविवार	सोम	मंगल	बुध	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
31 सभो॰ 2:1-26					**1** 2 राजा 18:1-16	**2** 2 राजा 18:17-37
3 2 राजा 19:1-19	**4** 2 राजा 19:20-37	**5** 2 राजा 20:1-21	**6** 2 राजा 21:1-18	**7** 2 राजा 22:1-20	**8** 2 राजा 23:1-30	**9** 2 राजा 23:31; 24:17
10 2 राजा 24:18-25	**11** 2 राजा 25:13-30	**12** 1 कुरि॰ 10:1-13	**13** 1 कुरि॰ 10:14; 11:1	**14** 1 कुरि॰ 11:2-16	**15** 1 कुरि॰ 11:17-34	**16** 1 कुरि॰ 12:1-13
17 1 कुरि॰ 12:14-31	**18** 1 कुरि॰ 13:1-7	**19** 1 कुरि॰ 13:8-13	**20** 1 कुरि॰ 14:1-19	**21** 1 कुरि॰ 14:20-40	**22** 1 कुरि॰ 15:1-19	**23** 1 कुरि॰ 15:20-34
24 1 कुरि॰ 15:35-50	**25** 1 कुरि॰ 15:51-58	**26** 1 कुरि॰ 16:1-24	**27** भजन॰ 110, 111	**28** भजन॰ 112, 113	**29** भजन॰ 114, 115	**30** सभो॰ 1:1-18

अगस्त

रविवार	सोम	मंगल	बुध	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	1 सभो॰ 3:1-22	**2** सभो॰ 4:1-16	**3** सभो॰ 5:1-20	**4** सभो॰ 7:1-14	**5** सभो॰ 8:1-17	**6** सभो॰ 9:1-18
7 सभो॰ 10:1-20	**8** सभो॰ 11:1-10	**9** सभो॰ 12:1-14	**10** 1 पतरस 1:1-12	**11** 1 पतरस 1:13-25	**12** 1 पतरस 2:1-10	**13** 1 पतरस 2:11-25
14 1 पतरस 3:1-12	**15** 1 पतरस 3:13-22	**16** 1 पतरस 4:1-11	**17** 1 पतरस 4:12-19	**18** 1 पतरस 5:1-14	**19** भजन॰ 114, 115	**20** सप॰ 1:1-18
21 सप॰ 2:1-15	**22** सप॰ 3:1-20	**23** फिले॰ 1:1-25	**24** भजन॰ 116, 117	**25** भजन॰ 119:1-16	**26** भजन॰ 119:17-32	**27** दानि॰ 1:1-21
28 दानि॰ 2:1-23	**29** दानि॰ 2:24-49	**30** दानि॰ 3:1-18	**31** दानि॰ 3:19-30			

दूसरों के सामने आपकी गवाही

(गुप्त मसीही न बनिए)

मसीही जीवन गुप्त रूप से बिताना असम्भव है, फिर भी कुछ लोग ऐसा करने का प्रयत्न करते भी है। जीवन तो प्रगट होकर ही रहता है, चाहे जहाँ हो और जैसा भी उसका स्वभाव हो। नया जीवन भी जो विश्वासी को प्रेम यीशु से मिलता है, प्रत्यक्ष रूप से प्रगट होना ही चाहिए। मसीही जीवन को सफल बनाने के लिए एक ही तरीका यह है कि वह निर्भय और बिना शरमाये खुले रूप से जीवन हो। यदि आप वास्तविक मसीही जीवन व्यतीत करने की इच्छा रखते हैं तो आप अपने परमेश्वर को ग्रहण करने और उससे प्रेम रखने की गवाही संसार के सामने प्रत्यक्ष रूप से दीजिए, अपनी मसीहियत को छिपाने का प्रयास न कीजिए उसे दीवट पर रखिये ताकि वह पहाड़ पर बसे नगर की तरह सबको दिखाई दे। आपको न केवल अपने व्यवहार द्वारा प्रभु यीशु को दूसरों के सामने दिखाना है, बल्कि अपने मुंह से भी सबको उसके बारे में गवाही देना है।

प्रभु यीशु की गवाही खुले रूप से देने की इसलिए आवश्यकता है क्योंकि प्रभु यीशु ने स्वयं ही ऐसा आदेश दिया है–"जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा" (मत्ती 10:32)। उसकी यह मांग है कि लोगों के सामने उसकी गवाही दी जाये। इसी के आधार पर वह अपने पिता के सामने हमारी गवाही देगा। यह उस आशिष का भाग है जो पिता की ओर से हमको मिलती है।

रोमियों 10:9-10 में पवित्रात्मा कहता है, "यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर मान ले और मन में विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया तो तू उद्धार पायेगा।" अतः मुक्तिदाता का खुले रूप में अंगीकार करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। अंगीकार न करना प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करना और अपने ही उद्धार के नाते प्रभु को रोके रखना है क्योंकि उस दशा में, न तो वह हमारे जीवन में अपना कार्य पूरा कर सकता है और न हमें अपने आनन्द से भर सकता है।

खुले रूप से प्रभु यीशु की गवाही देने का दूसरा कारण यह है कि इससे हमारे मसीही जीवन को दृढ़ता और सहायता मिलती है, जब भी कोई मसीही अपने प्रभु की गवाही देता है वह अध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली हो जाता है। एक गवाही देने वाले मसीही के लिए पिछड़ने का खतरा नहीं परन्तु इस प्रकार गवाही न देना अक्सर मसीही जीवन में पिछड़ जाने का कारण बन जाता है। बहुत से मसीहियों के पतन का आरम्भ इसी स्थान से होता है। यद्यपि शुरू में आपको अपने मसीही विश्वास की गवाही देना कठिन प्रतीत हो, तौभी इसका फल हमेशा अकथनीय आनन्द होता है। बहुत से ऐसे नये मसीही जो पहली बार गवाही देते समय डर से थरथराते थे, पर गवाही देने के बाद ही उनके हृदय आनन्द से उमड़ने लग गया था।

आपके विश्वास की खुली गवाही अनेक समस्याओं को हल कर देती है। जब सांसारिक

और अधर्मी लोगों को यह पता चल जाता है, कि किसी व्यक्ति ने प्रभु यीशु को पूर्ण रूप से ग्रहण कर लिया है, तो फिर वे अपवित्र खेल-तमाशों और अधर्मी कार्यों में भाग लेने को उसे बाध्य नहीं करते। शायद संसार ऐसे मसीहियों से प्रकट रूप से प्रेम न करे, पर वह ऐसों का आदर करता है। इसके विपरीत नाम मात्र मसीहियों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है और वे हमेशा ही अनुचित कार्य करने के लिए बाध्य किये जाते रहते है। इस प्रकार निर्भय गवाही मसीही जीवन में जय का कारण है।

केवल एक बार ही गवाही देना बस नहीं, आपको लगातार प्रभु की गवाही देना है। कभी भी उसकी गवाही देने में न शरमाये, बल्कि क्या अकेले में और गवाही सभाओं में, हर जगह लोगों को बताइये कि आप मसीह के हो चुके है। कलीसिया में, घर पर काम करते समय, स्कूल में, आफिस में, हर जगह लोग आपकी परिस्थिति को मालुम करें कि आप अपने प्रभु से प्रेम रखते है। हाँ, यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आपकी गवाही सदा नम्रता-पूर्वक होनी चाहिए; घमण्ड से दी हुई गवाही व्यर्थ हो जाती है।

बहुत ही ईमानदारी के साथ अपने घराने में साहसपूर्वक प्रभु का गवाही दीजिए पहले अपने घर के लोगों और मित्रों के बीच में। अपनी गवाही अपने घराने से ही शुरू कीजिए आप किस प्रकार मसीही जीवन व्यतीत करने की आशा कर सकते है। जब कि आप अपने निकट के लोगों को ही अपने प्रभु यीशु के बारे में नहीं बताते है? आपके होठों से वे यीशु की गवाही सुने और आपके जीवन में यीशु को देखे। यदि आप अपने घर में ही ऐसा न कर सके, तो फिर बाहर गवाही देने के लिए आपको शक्ति न मिल पाएगी।

"हम उसके गवाह हैं" प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से बहुत ही सफाई से कहा था कि "तुम मेरे गवाह हो" (लूका 24:48)। इसलिए हमें दूसरों के सामने अपने मसीही जीवन की गवाही देना जरूरी है 'हम गुप्त मसीही न बने'।

एन्ड्रू चरन
सह-संपादक

बच्चों से अनुरोध है कि अपने द्वारा लिखी गई कहानियाँ हमें भेजें। पसंद आने पर हम उन्हें पत्रिका में प्रकाशित करेंगे। कृप्या ध्यान रखें कि प्रकाशक आपके द्वारा भेजे गए किसी भी लेख को छापने के लिए बाध्य नहीं है।

The Editor
JEEVAN SAKSHI
Masihi Sahitya Sanstha
70, Janpath, New Delhi -110001
E-mail: infojeevansakshi@gmail.com

(लेखक अपने लेखों आदि के प्रति स्वयं उत्तरदायी होगा)

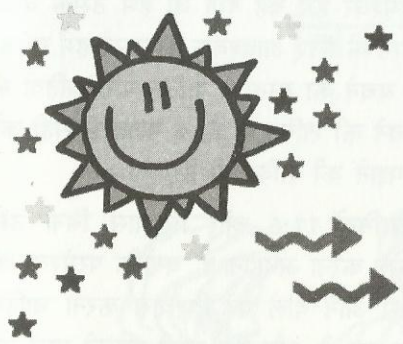

बच्चों के लिए बाइबल की सत्य कहानियां

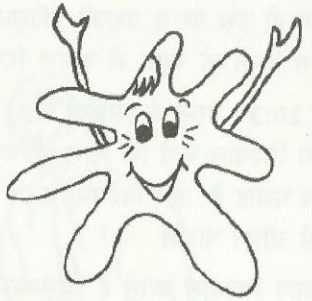

राई के दाने के समान विश्वास

मत्ती 17:20-21
क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, यहाँ से सरककर वहाँ चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये असम्भव न होगी।"

मरकुस 11:22-24
यीशु ने उसको उत्तर दिया, "परमेश्वर पर विश्वास रखो। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा। इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तथा प्रतीति करो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।

विश्वास होना किसी पर भरोसा रखना है। यह भरोसा ऐसा ही है। कुछ लोग जो भी कहा गया है सब पर विश्वास करते है। कुछ सब के लिए सबूत मांगते है। ज्यादातर लोग किसी

चीज पर जब तक भरोसा नहीं करते तब तक वे उसे देख न ले। इसलिए परमेश्वर ने लोगों को बहुत सारे सबूतों के साथ भेजा ताकि लोग उसके अस्तित्व प्रेम को स्वीकार करे और आसानी से उस पर विश्वास करे और उस में भरोसा रखे।

रोमियों 10:17 अत: विश्वास सुनने से और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है।

हम परमेश्वर पर बहुत से कारणों से विश्वास करते है: क्योंकि हम अपने चारों ओर अद्भूद सृष्टि को देखते है। क्योंकि उसने अपने आपको साबित करने के लिए सबूत दिये। क्योंकि हम उसे देखते है कि वह कैसे हमारे बीच में रहने वालो के जीवन में कार्य करता है। परमेश्वर ने हमसे कभी नहीं कहा कि हम

उस पर अन्धा विश्वास करे या जिसका कोई आधार न हो। यह बहुत ही बेवकूफी होगी यदि आप उस पर विश्वास करें जिसका कोई परिमाण हो उस पर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के बहुत से कारण दिए है।

यूहन्ना 20:31 परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

क्या आप विश्वास करते है कि आस्ट्रेलिया है? क्या आप वहाँ कभी गए है? मैंने अपनी आँखों से आस्ट्रेलिया नहीं देखा है लेकिन मैंने उसकी तस्वीर देखी है। मैंने आस्ट्रेलिया के लोगों से बात भी की है। बहुत से विश्वासयोग्य लोग विश्वास करते है कि वह है। इस परिमाणों के आधार पर, मेरे पास यह सन्देह करने के लिए कोई कारण नहीं है कि दूसरे संसार में आस्ट्रेलिया नाम का कोई दूसरा महाद्वीप है।

हम इस जीवन में अपनी आँखों से यीशु को न देखें, लेकिन हमारे चारो ओर परिमाण है कि वह विद्यमान है और वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।

यीशु के पास प्रत्येक प्रेरितों के लिए एक अलग कार्य था। उसको चमत्कार करने की शक्ति प्राप्त थी ताकि वो ये सिद्ध कर सके कि उन्होंने जो यीशु के बारे में कहा वह सत्य है। परमेश्वर ने उन्हें सब कुछ दिया जो उसका कार्य करने के लिए आवश्यक था। प्रेरितों को यह विश्वास करना था कि परमेश्वर वह करेगा जो वे नहीं कर सके।

परमेश्वर ने हम सबको वह सब कुछ दिया है जो हमें परमेश्वर के कार्य करने के लिए चाहिए। हमें यह विश्वास करना है कि परमेश्वर हमें वह देगा जो हमें उसके कार्य करने के लिए आवश्यक है। उसने हमें परीक्षा से बचने का रास्ता व कठिन परिस्थितियों से बचने की शक्ति दी है, व गलत से सही को समझने की शक्ति दी है।

इब्रानियों 11:6 और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और वह अपने खोजने वाले को प्रतिफल देता है।

स्मरण के लिए: हमारा परमेश्वर महान परमेश्वर है।

शब्दावली

विश्वास= भरोसा, यकीन किसी पर निर्भर होना।

अध्याय:

मत्ती 17:19-20: तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, उसे क्यों नहीं निकाल सके? उसने उनसे कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, क्योंकि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, यहाँ से सरककर वहाँ चला जा, तो वह चला जाएगा, और कोई बात तुम्हारे लिए असम्भव नहीं होगी।

लूका 17:5-6: प्रेरितों ने प्रभु से कहा, हमारा विश्वास बढा प्रभु ने कहा, यदि तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़कर समुद्र में गिर जा, तो वह तुम्हारी मान लेता।

यीशु ने अपने शिष्यों को वो सभी योग्यताएँ दी थी जिससे वो सभी प्रकार की बिमारियों को चंगा कर सके ताकि वो मनुष्यों में सिद्ध

चित्र में रंग भरें

कर सके कि उनका सन्देश परमेश्वर की तरफ से आता है। एक व्यक्ति दुष्ट-आत्मा से ग्रस्त बच्चे को उनके शिष्यों के पास लाया। वे दुष्ट-आत्मा को निकालने के लायक थे, लेकिन निकाल न सके। जब यीशु ने दुष्ट-आत्मा निकाली तो उन्होंने पूछा कि वो क्यों असफल रहे। उसने उत्तर दिया, उनमें पर्याप्त विश्वास नहीं था। यदि उनके पास राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो वो कुछ भी कर सकते थे।

राई का बीज बहुत ही छोटा होता है (यदि आप दिखा सकते हैं तो दिखाए) लेकिन जब उगाया जाता है तो वह इतने बड़े पौधे में ऊग जाता है कि जानवरों को छाया व भोजन के लिए लाभदायी होता है। यीशु ने कहा की छोटा सा विश्वास भी परिणाम दे सकता है। शिष्यों को किस पर विश्वास करना था? परमेश्वर पर। शिष्यों ने सोचा की दुष्टात्मा निकालना उनके लिए बहुत कठिन है। यह सच है कि यह कठिन था। उनके अपने पास यह योग्यता नहीं थी। लेकिन क्या परमेश्वर दुष्टात्मा निकाल सकता है? हाँ। क्या परमेश्वर हम जो कुछ भी कहे कर सकता है? बिल्कुल। इसलिए हम जब भी सन्देह करते हैं, हम परमेश्वर की योग्यता पर सन्देह करते हैं।

हमें बहुत ज्यादा विश्वास की आवश्यकता नहीं है बस एक राई के दाने के बराबर की है। ताकि अच्छे परिणाम ला सके क्योंकि हमारा परमेश्वर महान परमेश्वर है। हमें सिर्फ परमेश्वर पर विश्वास रखना है और उसकी चिन्ता नहीं करनी है कि हम क्या कर सकते हैं और क्या नहीं। परमेश्वर कभी भी हमसे वह करने को नहीं कहेगा जिसे हम कर नहीं सकते। वह चाहता है कि हम हमेशा उसका कार्य करने के लिए इच्छुक रहे। परमेश्वर हमें विश्राम दिया। उसने याकूब 5:16-18 में कहा, इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के आमने-सामने अपने-अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि मेह न बरसे और साढ़े तीन वर्ष तक पृथ्वी पर मेह नहीं बरसा। फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई और भूमि फलवन्त हुई।

विचार विमर्श:

परमेश्वर से हम जो कुछ भी मांगते हैं वह क्या हमें देगा? जरूरी नहीं क्योंकि हम नहीं जानते की हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है पर वह जानता है। यीशु ने हमें इस तरह प्रार्थना सिखाई हैं, "मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा' पूरी हो।" लूका 22:24 परमेश्वर चाहता है कि जो हमारे लिए सबसे अच्छा हो वह हमें दे। कभी-कभी हमारी इच्छा के विरुद्ध भी। याकूब 4:3 में कहता है, "कि तुम मांगते हो पर नहीं पाते। क्योंकि तुम गलत तरीके से मांगते हो, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो। वह यह भी चिताता है कि एक सन्देह करने वाला कभी भी कुछ नहीं पाएगा। याकूब 1:6-8 पर विश्वास से मांगे और कुछ सन्देह न करे, क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती है और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा। वह व्यक्ति दुचित्ता है और अपनी सारी बातों में चंचल है। क्या इनमें से कोई परमेश्वर की कुछ भी करने की योग्यता पर सवाल करता है? नहीं। वह सर्वसामर्थी है।

सत्य व असत्य:

1. परमेश्वर कुछ भी कर सकता है? ____
2. परमेश्वर कुछ भी करेगा? _____
3. प्रार्थना की सामर्थ हम में हैं? _____
4. हमें अपने विश्वास को बढ़ाने के लिए कार्य करना चाहिए? _____
5. परमेश्वर अपने कार्य के लिए हमें इस्तेमाल करता है? _____

स्मरण के लिए आयत:

मत्ती 7:7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूंढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।

इब्रानियों 11:1 अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

मत्ती 19:26 यीशु ने उनकी और देख कर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

प्रश्न:

1. विश्वास क्या है?
2. आयत सुनाओ?
3. 'राई का दाना' से एक मिनट में आप जितने शब्द लिख सकते है लिखो?
4. शिष्यों ने कैसा महसूस किया जब वे दुष्ट-आत्मा नहीं निकाल पाए और यीशु ने निकाल दी?
5. आप क्या सोचते हैं परमेश्वर कैसा महसूस करता है जब हम उस पर सन्देह करते हैं?
6. आप क्या सोचते हैं परमेश्वर कैसा महसूस करता जब हम उस पर भरोसा करते हैं?
7. आप अपने भरोसे को कायम रखने के लिए क्या करते हैं?
8. उनका नाम लिखो जिस पर आप विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर ऐसा कर सकता है या किया है (हमसे, इस कक्षा में)?
9. उसका नाम लिखो जो आप परमेश्वर के लिए कर सकते हैं?
10. उन बड़ी व सामर्थपूर्ण चीजो को लिखें जो छोटे से शुरू हुई है, या छोटी चीज से बनी है (बच्चे, तूफान, पोधे इत्यादि)?
11. क्या हमें पर्वत को हटाने की आवश्यकता है?
12. क्या शिष्य उस लड़के में से दुष्ट-आत्मा निकालने में सामर्थी थे?
13. यीशु किसको सिखा रहे थे?
14. शिष्य को विश्वास के लिए सुझाव की आवश्यकता क्यों पड़ी?
15. परमेश्वर के कार्य के लिए हमें शक्ति कौन प्रदान करता है?

इस कहानी से मैंने क्या सीखा?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

लाती है, जो अलगाव, खालीपन और सूनापन लाती है।

पाप करने से पहले जितना आकर्षक दिखाई देता है, करने के बाद उतना ही अधिक घातक होता है।

पाप करने से पहले जितना उजला प्रतीत होता है करने के बाद उतना ही अधिक अन्ध कारपूर्ण होता है।

पाप करने से पहले जितना सुखद प्रतीत होता है करने के बाद उतना ही दुखद परिणाम लाता है।

पाप करने से पहले जितना आनन्द-दायक है बाद में उतना ही कष्ट दायक भी है।

हमारे जवनों में शैतान इसी प्रकार बहुत आकर्षक ढंग से पाप को प्रस्तुत करता है। आज टेलीविजन पर सिगरेट और शराब जैसी बुरी वस्तुओं के विज्ञापन इतने आकर्षक रूप में दिखाए जाते है और लोगों के मनों पर ऐसा प्रभाव डालते है कि लोग उनका इस्तेमाल करने के लिए उत्साहित हो उठते है। इस तरह वे उन बुरी आदतों में लिप्त हो जाते है।

इसी कारण पवित्रशास्त्र कहता है: उन्हें स्वतन्त्र होने कि प्रतिज्ञा तो देते है पर आप ही सड़ाहट के दास है क्योंकि जो व्यक्ति जिससे हार गया हो वह उसका दास बन जाता है। और जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नान प्रकार की अशुद्धता से बच निकले और फिर उनमें फंसकर हार जाए तो उनकी दशा पहिले से भी बुरी हो गई" (2 पतरस 2:19-20)।

आज हमारे जीवन की सबसे प्रमुख आवश्यकता यह है कि हम प्रभु यीशु को अपना जीवन पूर्णता से समर्पित करे और पाप की दासता से पूरी तरह स्वतन्त्र हो क्योंकि केवल प्रभु यीशु ही है जो हमें शरीरिक स्वतन्त्रता देता है, हमें मानसिक रूप से स्वतन्त्र करता है, हमें आत्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करता है।

प्रभु यीशु हम सबको सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करने में मदद करे। *आमीन*

*****

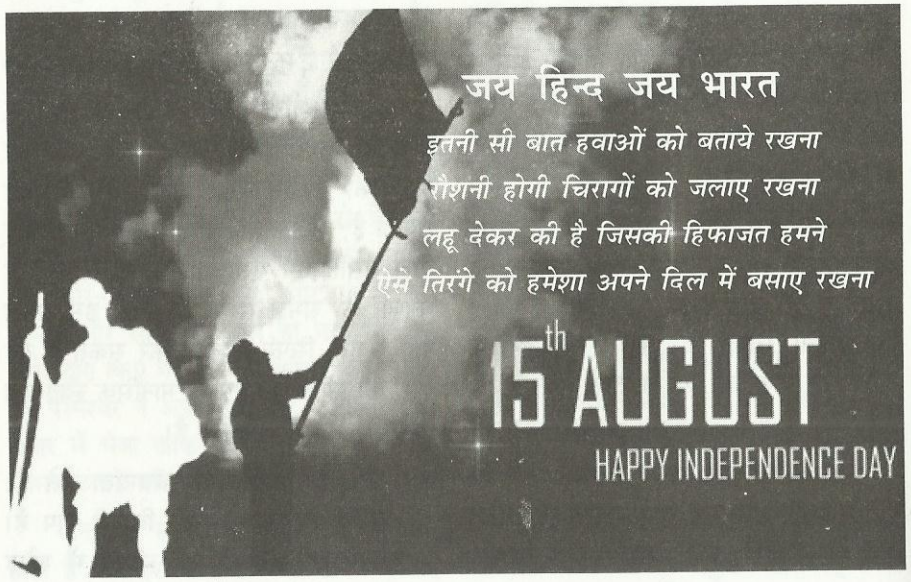

Form No. .....
Date: .....
Ref. By: .....

जीवन साक्षी

मसीही साहित्य संस्था की द्विमासिक पत्रिका

Personal & Gift Subscription		Overseas Subscription	
1 Yr.	Rs. 200	1 Yr.	Rs. 1000
2 Yrs.	Rs. 300	2 Yr.	Rs. 1800
3 Yrs.	Rs. 500	3 Yr.	Rs. 2500
5 Yrs.	Rs. 900	5 Yr.	Rs. 4000
10 Yrs.	Rs. 1600	10 Yr.	Rs. 8000

कृपया नीचे दिए गए फार्म को स्पष्ट शब्दों में भर कर चैक या ड्राफ्ट (पत्रिका शुल्क) के साथ नीचे दिए पते पर भेजें।

SUBSCRIPTION MEMBERSHIP FORM
सदस्यता लेने के लिए फार्म

Name: .....

Address: .....

.....

State: ..... Pin Code: .....

Mob: ..... E-mail: .....

Donation Amount: .....

Note:

Kindly Send your donations / Subscription amount in favour of **'MASIHI SAHITYA SANSTHA'** by Cheque / DD and Send on below given address:

The Editor
Jeevan Sakshi
MASIHI SAHITYA SANSTHA
70 Janpath, New Delhi-110001, India

MSS BOOKS

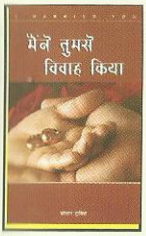

Maine Tumse Vivah Kiya
Price Rs. 90/-

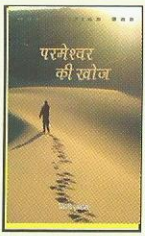

Parmeswar ki Khoj
Price Rs. 40/-

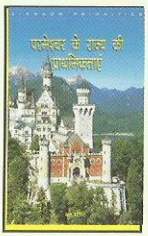

Kingdom Priorities by Clay Sterett
Price Rs. 145/-

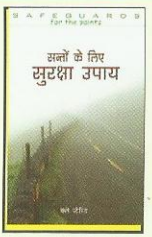

Safeguards by Clay Sterett
Price Rs. 65/-

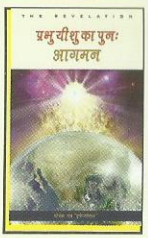

The Revelation
Price Rs. 75/-

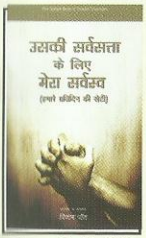

My Utmost for His Highest
Price Rs. 150/-

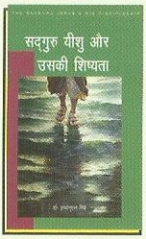

Sadguru Yeshu by Dr. Emmanuel Singh. Price Rs. 135/-

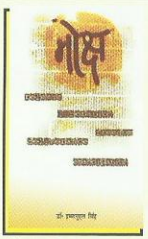

Moksha by Dr. Emmanuel Singh
Price Rs. 40/-

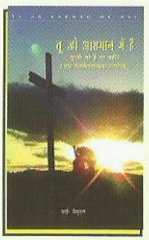

Tu Jo Aasman Me Hai by Y. Samuel
Price Rs. 45/-

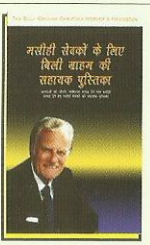

Christian Hand book by Billy Graham. Price Rs. 200/-

Bedari Ke Geet
Price Rs. 35/-

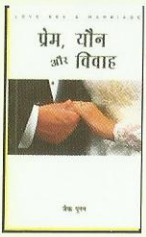

Prem, Yaun aur Vivah
Price Rs. 60/-

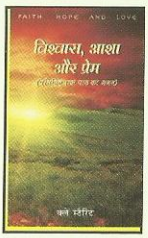

A Daily Devotional Book
Price Rs. 175/-

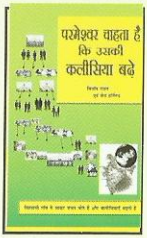

God Wants His Church To Grow. Price Rs. 175/-

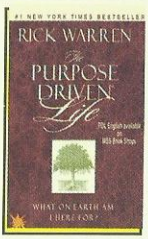

PDL by Rick Warren
Price Rs. 200/-

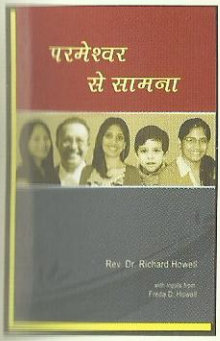

Parmeshwar Se Saamna
by Rev. Dr. Richard Howell
Price Rs. 75/-

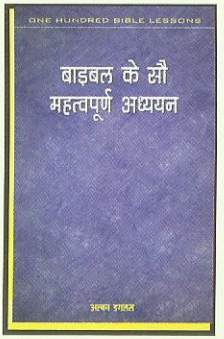

100 Bible Lesson by Alban Douglas. Price Rs. 200/-

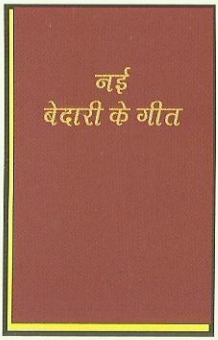

Nei Bedari Ke Geet
Price Rs. 200/-

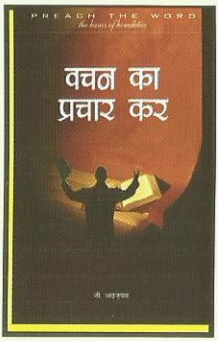

Preach the Word by G. Isayah
Price Rs. 150/-

For More Information:

Masihi Sahitya Sanstha	MSS Book Shop Indore	MSS Book Shop
70 Janpath, New Delhi - 1	Masihi Mandir Church	42 Khan Market, New Delhi - 3
Ph: 011-23320253, 23320373,	Near Christian Hospital, Chawani, Indore	Ph: 011-24698697
E-mail: mssjanpath@gmail.com	E-mail: mssindorebranch@gmail.com	E-mail: msskhanmarket@gmail.com

MSS NEW BOOKS & CALENDERS

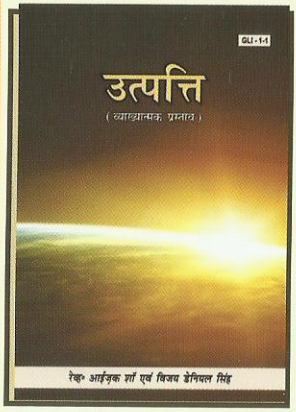

Book of Genesis
Rs. 120/-

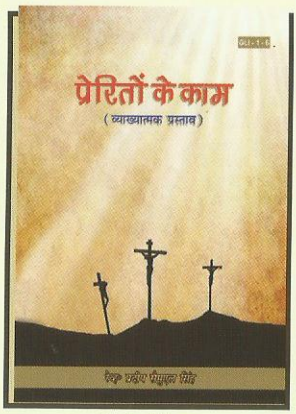

Book of Acts
Rs. 140/-

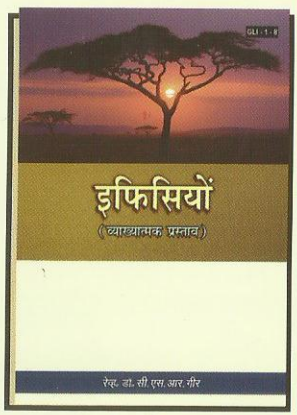

Book of Ephesians
Rs. 110/-

MSS Biblical Calendars 2017

Retail Price: Rs. 35/- & Rs. 40/- (General) 33% discount on bulk order + VAT + Packing & Postage etc.

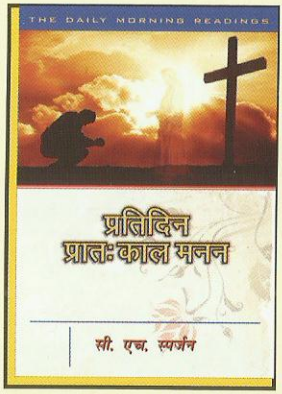

The Daily Morning Readings
Rs. 175/-

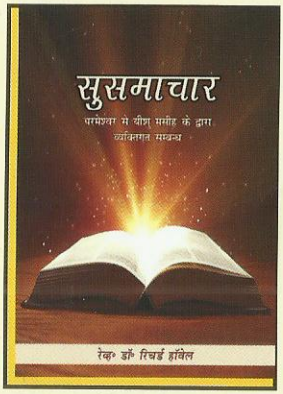

Susamachar
Rs. 120/-

Wall Planner 2017
Rs. 25/-